PCS Exam Series

दृष्टि The Vision

बी.पी.एस.सी.

मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन

- सामान्य अध्ययन का संपूर्ण पाठ्यक्रम शामिल
- सांख्यिकी पर विशेष फोकस
- कला एवं संस्कृति का आकर्षक प्रस्तुतीकरण
- बिहार राज्य से संबंधित सभी विषयों पर अद्यतन सामग्री
- प्रौद्योगिकी विकास पर संक्षिप्त एवं सटीक सामग्री
- मुख्य परीक्षा हेतु अभ्यास प्रश्न

Think IAS — दृष्टि The Vision — Think Drishti

प्रिलिम्स प्रैक्टिस सीरीज़

(यूपीएससी प्रिलिम्स-2020 पर केंद्रित)

ये होगा इस सीरीज़ में...

- प्रश्नोत्तर रूप में प्रारंभिक परीक्षा का संपूर्ण पाठ्यक्रम कवर
- सटीक एवं संक्षिप्त व्याख्या
- बीते वर्षों में विभिन्न परीक्षाओं में पूछे गए प्रश्नों की प्रकृति पर आधारित
- आगामी परीक्षाओं हेतु संभावित प्रश्नों का संकलन
- प्रिलिम्स के पहले संपूर्ण अभ्यास सैट
- प्रश्न हल करने की तकनीक
- व्याख्या के माध्यम से पूरे पाठ्यक्रम का रिवीज़न

ये 6 पुस्तकें आएंगी...

- भारतीय संविधान एवं राजव्यवस्था (1600+ प्रश्न)
- भारतीय इतिहास व कला एवं संस्कृति (2000+ प्रश्न)
- भूगोल एवं पर्यावरण-पारिस्थितिकी (1800+ प्रश्न)
- भारतीय अर्थव्यवस्था (1100+ प्रश्न)
- सामान्य विज्ञान एवं विज्ञान-प्रौद्योगिकी (1100+ प्रश्न)
- आर्थिक सर्वेक्षण, बजट, भारत-2020 व समसामयिकी (1100+ प्रश्न)

ये सभी पुस्तकें प्रत्येक 15 दिनों के अंतराल पर अप्रैल 2020 के अंतिम सप्ताह तक प्रकाशित हो जाएंगी।

विस्तृत जानकारी के लिये कॉल करें : 8448485516, 87501-87501, 011-47532596

दृष्टि The Vision

बी.पी.एस.सी.

मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन

(प्रथम एवं द्वितीय प्रश्नपत्र)

दृष्टि पब्लिकेशन्स

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501

Website:
www.drishtipublications.com, www.drishtiias.com
E-mail :
bookstеam@groupdrishti.com

प्रथम संस्करण- मार्च 2020

मूल्य : ₹ 375

प्रकाशक

दृष्टि पब्लिकेशन्स,
(A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.)
641, प्रथम तल,
डॉ. मुखर्जी नगर,
दिल्ली-110009

विधिक घोषणाएँ

- इस पुस्तक में प्रकाशित सूचनाएँ, समाचार, ज्ञान एवं तथ्य पूरी तरह से सत्यापित किये गए हैं। फिर भी, यदि कोई जानकारी या तथ्य गलत प्रकाशित हो गया हो तो प्रकाशक, संपादक या मुद्रक उससे किसी व्यक्ति-विशेष या संस्था को पहुँची क्षति के लिये ज़िम्मेदार नहीं है।
- हम विश्वास करते हैं कि इस पुस्तक में छपी सामग्री लेखकों द्वारा मौलिक रूप से लिखी गई है। अगर कॉपीराइट उल्लंघन का कोई मामला सामने आता है तो प्रकाशक को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जाएगा।
- सभी विवादों का निपटारा दिल्ली न्यायिक क्षेत्र में होगा।
- © **कॉपीराइट:** दृष्टि पब्लिकेशंस (A Unit of VDK Publications Pvt. Ltd.), सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी अंश का प्रकाशन अथवा उपयोग, प्रतिलिपीकरण, ऐसे यंत्र में भंडारण जिससे इसे पुनः प्राप्त किया जा सकता हो या स्थानान्तरण, किसी भी रूप में या किसी भी विधि से (इलेक्ट्रॉनिक, यांत्रिक, फोटो-प्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग या किसी अन्य प्रकार से) प्रकाशक की पूर्वानुमति के बिना नहीं किया जा सकता।

- एम.पी. प्रिंटर्स, बी-220, फेज़-2, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित।

दो शब्द

प्रिय पाठको,

जब परीक्षा की घड़ी नज़दीक हो तब आपके पास पाठ्य-सामग्री के चुनाव में प्रयोग करने की छूट नहीं होती। यह समय आपको इस बात की इजाज़त नहीं देता कि पहले आप एक से अधिक पुस्तकें पढ़ें और अंततः तैयारी के लिये किसी एक पुस्तक का चयन करें। यह भटकाव आपको निर्णायक नुकसान पहुँचा सकता है। ऐसे में आवश्यक है कि आप किसी भरोसेमंद प्रकाशन की किताब चुनें जिसकी अध्ययन सामग्री पर आप आँख मूँदकर भरोसा कर सकें। इससे आपकी एकाग्रता भी भंग नहीं होगी और आप आसानी से रिवीज़न भी कर पाएंगे। 'दृष्टि पब्लिकेशन्स' की अब तक प्रकाशित सभी पुस्तकों पर आप पाठकों ने जो गहरा विश्वास जताया है, प्रस्तुत पुस्तक 'बी.पी.एस.सी. मुख्य परीक्षा : सामान्य अध्ययन' भी उसी भरोसे पर खरा उतरने की एक कोशिश है। आप जानते ही हैं कि हमने पिछले वर्ष बीपीएससी प्रारंभिक परीक्षा पर केंद्रित 'बिहार : समग्र अवलोकन' का प्रकाशन किया था। आप पाठकों ने इसे खूब सराहा। साथ ही आपने हमसे यह निवेदन भी किया कि हम मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर एक पुस्तक प्रकाशित करें। अतः हमारी टीम ने महीनों इस पर काम किया ताकि एक परीक्षोपयोगी पुस्तक तैयार हो सके।

ध्यातव्य है कि बिहार लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सेवा मुख्य परीक्षा में सामान्य अध्ययन के दो प्रश्नपत्र होते हैं। पहले प्रश्नपत्र में इतिहास, कला व संस्कृति, विभिन्न विचारक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम तथा सांख्यिकी जैसे विषय शामिल हैं। दूसरे प्रश्नपत्र में राजव्यवस्था, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अर्थव्यवस्था तथा भूगोल जैसे विषय हैं। आप देख सकते हैं कि इनमें से कुछ विषय ऐसे हैं जो समसामयिकी से नाभिनालबद्ध हैं, जैसे- अंतर्राष्ट्रीय संबंध, अर्थव्यवस्था, प्रौद्योगिकी विकास तथा राजव्यवस्था; वहीं इतिहास, कला व संस्कृति तथा भूगोल जैसे विषयों में परंपरागत अवधारणा की स्पष्ट समझ होनी आवश्यक है। साथ ही बिहार राज्य के विशेष संदर्भ में भी उपरोक्त खंडों को तैयार करना होगा ताकि एक भी प्रश्न तैयारी की परिधि से बाहर न हो।

अब अगर हम प्रस्तुत पुस्तक की बात करें तो इसमें उन सभी बातों का ख्याल रखा गया है जो आपकी सफलता की राह को आसान बना दे। इसमें सात खंडों के अंतर्गत सांख्यिकी समेत सामान्य अध्ययन के सभी विषयों को शामिल किया गया है। हमने इस बात का विशेष ध्यान रखा है कि परीक्षा के महत्त्व की दृष्टि से ही पाठ्य-सामग्री का प्रस्तुतीकरण हो। इसलिये राजव्यवस्था तथा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी खंड को विस्तारपूर्वक कवर किया गया है क्योंकि बीते वर्षों में इन खंडों से सर्वाधिक प्रश्न पूछने का चलन रहा है। साथ ही, ऐसे प्रत्येक खंड जिन्हें समसामयिक घटनाक्रम से अद्यतन करने की आवश्यकता थी उन्हें पूर्णतः अद्यतन कर दिया गया है। आपकी सुविधा के लिये हमने समसामयिकी का एक अलग खंड भी दे दिया है ताकि नवीन परिवर्तन एक साथ आपकी स्मृति में रहें और आप इसे आसानी से रिवाइज़ भी कर पाएँ। ऐसे में आपको किसी अन्य पुस्तक से समसामयिक खंड तैयार करने की आवश्यकता नहीं है। इसके अतिरिक्त परंपरागत खंड की बात करें तो भूगोल के सभी महत्त्वपूर्ण अवधारणाओं का उल्लेख तो है ही साथ ही बिहार की प्रादेशिक विशेषताओं को भी शामिल किया गया है। इतिहास एवं कला-संस्कृति के खंड को इस प्रकार तैयार किया गया है कि संपूर्ण भारतीय इतिहास व बिहार के विशेष संदर्भ को आप समेकित दृष्टि से ग्रहण कर सकें। इससे तैयारी में भी आसानी होगी और उत्तर लेखन की गुणवत्ता में भी वृद्धि होगी।

इस पुस्तक की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता की बात करें तो इसके सामान्य अध्ययन के सभी खंडों को एक साथ संकलित किया गया है। आमतौर पर विद्यार्थियों को अलग-अलग खंड की तैयारी के लिये अलग-अलग पुस्तकों को पढ़ना पड़ता है। यह प्रक्रिया समयसाध्य भी होती है और इससे सामान्य अध्ययन की समग्र तैयारी भी नहीं हो पाती। इसलिये हमने एक जगह सटीक और सारगर्भित पाठ्य-सामग्री का संकलन किया है। साथ ही इसमें आर्थिक सर्वेक्षण, केंद्रीय बजट तथा वन रिपोर्ट जैसे परीक्षोपयोगी सामग्री को भी शामिल किया गया है।

आप परीक्षा के पहले अपनी तैयारी को परख सकें इसलिये बीते वर्षों में पूछे गए प्रश्नों के साथ-साथ अभ्यास प्रश्नों को भी शामिल किया गया है। सांख्यिकी खंड में हमने बीते वर्षों में पूछे गए प्रश्नों व उसके समाधान के साथ अभ्यास प्रश्न व उसका समाधान भी दिया है ताकि आप आसानी से इसे तैयार कर सकें और बिना किसी दुविधा के परीक्षा में प्रश्नों को हल कर सकें।

अब पुस्तक आपके हाथों में है। आप पढ़ें और इसका मूल्यांकन भी करें। आपकी प्रतिक्रिया हमें और बेहतर करने के लिये प्रोत्साहित करती है। **आप अपनी प्रतिक्रिया बेझिझक '8130392355' नंबर पर वाट्सएप मैसेज के माध्यम से हम तक पहुँचा सकते हैं।**

साभार,

प्रधान संपादक

दृष्टि पब्लिकेशन्स

अनुक्रम

1. **कला-संस्कृति एवं भारतीय इतिहास...................... 1-104**

- **मौर्य कला**
  - दरबारी अथवा राजकीय कला
  - लोककला
  - मौर्य काल में मूर्तिकला
  - मौर्यकालीन हस्तशिल्प
- **पाल कला**
  - पालकालीन मूर्तिकला
  - पाल वास्तुकला/स्थापत्यकला
  - पटना कलम
  - मधुबनी चित्रकला
  - मंजूषा चित्रकला
- **ब्रिटिश शासन के विरुद्ध नागरिक एवं जनजातीय विद्रोह**
  - नागरिक एवं जनजातीय विद्रोह
- **1857 का स्वतंत्रता संग्राम**
  - 1857 के विद्रोह का स्वरूप
  - विद्रोह की असफलता के कारण
  - विद्रोह के परिणाम
- **1857 की क्रांति में बाबू वीर कुँवर सिंह की भूमिका**
- **ब्रिटिश भारत में किसान आंदोलन**
  - किसान आंदोलनों का स्वरूप
- **आधुनिक भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन**
  - सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन का स्वरूप
- **भारत का सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन**
  - सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन की उपलब्धियाँ
  - सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन की सीमाएँ
  - ब्रिटिश शासन का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभाव
  - ब्रिटिश आर्थिक नीति
- **भू-राजस्व व्यवस्था**
- **विऔद्योगीकरण (हस्तशिल्प उद्योगों का पतन)**
- **धन का निष्कासन**
  - धन की निकासी के स्रोत
  - भारत में धन की निकासी के तीन चरण
  - धन की निकासी के परिणाम
- **कृषि का वाणिज्यीकरण**
- **भारत में आधुनिक उद्योगों का विकास**
- **राष्ट्रवाद का उदय**
  - भारतीय राष्ट्रवाद के उदय के कारण
- **भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना**
  - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस
  - कांग्रेस की स्थापना के वास्तविक उद्देश्य
- **राष्ट्रीय आंदोलन का प्रथम चरण**
  - उदारवादी चरण
  - उग्रवादी चरण
- **बंगाल विभाजन एवं स्वदेशी आंदोलन**
  - विभाजन की घोषणा
  - स्वदेशी आंदोलन
  - कांग्रेस का सूरत विभाजन
- **क्रांतिकारी आंदोलन (प्रथम चरण)**
  - महाराष्ट्र
  - पंजाब
  - बंगाल
  - मद्रास
  - अन्य देशों में क्रांतिकारी आंदोलन
  - क्रांतिकारी आंदोलन के पतन के कारण
- **राष्ट्रीय आंदोलन का द्वितीय चरण**
- **गांधीवादी आंदोलन (प्रथम चरण)**
  - चंपारण सत्याग्रह
  - खेड़ा और अहमदाबाद आंदोलन
  - खिलाफत आंदोलन
  - असहयोग आंदोलन
  - स्वराज पार्टी की स्थापना
- **क्रांतिकारी आंदोलन (द्वितीय चरण)**
  - उत्तर भारत में क्रांतिकारी आंदोलन
  - बंगाल में क्रांतिकारी आंदोलन
- **गांधीवादी आंदोलन (द्वितीय चरण)**
  - साइमन कमीशन
  - नेहरू रिपोर्ट
  - लाहौर अधिवेशन
  - सविनय अवज्ञा आंदोलन
  - सांप्रदायिक पंचाट और पूना समझौता
  - प्रांतीय चुनाव एवं सरकार का गठन
  - द्वितीय विश्वयुद्ध और राष्ट्रीय आंदोलन
  - क्रिप्स प्रस्ताव
  - भारत छोड़ो आंदोलन
  - सुभाष चंद्र बोस एवं आई.एन.ए.
  - वेवेल योजना
  - कैबिनेट मिशन योजना
  - अंतरिम सरकार का गठन
- **बिहार : राज्य विशेष**
  - बिहार में धर्म एवं समाज सुधार आंदोलन
- **बिहार में होमरूल आंदोलन**
- **चंपारण सत्याग्रह, 1917**
  - वर्तमान संदर्भ में प्रासंगिकता
  - आंदोलन के कारण
  - चंपारण आंदोलन और लखनऊ अधिवेशन, 1916
  - गांधीजी का चंपारण आगमन
  - चंपारण कृषि समिति का गठन
  - चंपारण आंदोलन का महत्त्व
- **बिहार में खिलाफत आंदोलन**
- **बिहार में असहयोग आंदोलन**
  - असहयोग आंदोलन की परिस्थितियाँ एवं कारण
- **सविनय अवज्ञा आंदोलन और बिहार**

- **बिहार में व्यक्तिगत सत्याग्रह**
  - सत्याग्रहियों की मांग
  - बिहार में व्यक्तिगत सत्याग्रह की प्रगति
- **बिहार में भारत छोड़ो आंदोलन**
- **स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की भूमिका**
- **बिहार में क्रांतिकारी राष्ट्रवाद**
  - क्रांतिकारी राष्ट्रवाद के उदय के कारण
- **बिहार राज्य का उदय**
- **बिहार में पाश्चात्य शिक्षा का विकास**
- **बिहार स्वतंत्रता संग्राम में पत्रकारिता का योगदान**
- **बिहार में किसान आंदोलन और स्वामी सहजानंद सरस्वती**
- **स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार के छात्रों का योगदान**
- **स्वतंत्रता आंदोलन में बिहार की महिलाओं की भूमिका/योगदान**
- **महात्मा गांधी**
  - पंचव्रत पर गांधीजी के विचार
  - गांधीजी के अन्य नैतिक विचार
  - गांधीजी के नैतिक विचारों का मूल्यांकन
- **रवीन्द्रनाथ टैगोर**
  - टैगोर के विचार तथा चिंतन
  - अन्य
- **जवाहर लाल नेहरू**
  - नेहरू का चिंतन व इतिहास दृष्टि
  - गांधी और नेहरू

2. राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम 105-178

- **जल शक्ति अभियान**
  - भारत में जल उपलब्धता की स्थिति
  - अभियान की समीक्षा/अभियान की प्रगति
  - भारत में जल संरक्षण से संबंधित समस्या
  - जल शक्ति मंत्रालय
  - बिहार विशेष के संदर्भ में जल शक्ति अभियान
- **प्लास्टिक प्रदूषण तथा एकल प्रयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध**
  - प्लास्टिक और उससे जुड़े विभिन्न पहलू
  - मानव स्वास्थ्य और पारितंत्र पर प्लास्टिक प्रदूषण का प्रभाव
  - समस्या के समाधान हेतु किये गए प्रयास
  - भारत सरकार द्वारा किये जा रहे प्रयास
  - अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किये जा रहे प्रयास
  - एकल प्रयोग प्लास्टिक पर प्रतिबंध
  - प्लास्टिक पर प्रतिबंध और बिहार
  - प्लास्टिक प्रदूषण के निस्तारण में चुनौतियाँ
- **जनसंख्या वृद्धि : समस्या और समाधान**
  - माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत
  - जनसंख्या नियंत्रण के तर्काधार
  - जनांकिकीय लाभांश या जनांकिकीय अभिशाप
  - जनसंख्या वृद्धि का प्रभाव
  - राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000
  - जनसंख्या नियंत्रण के उपाय
- **जम्मू एवं कश्मीर : हालिया बदलावों का विश्लेषण**
  - अनुच्छेद-370 तथा अनुच्छेद-35A
  - भारतीय संविधान का प्रभाव
  - वर्तमान समय में किये गए परिवर्तन
- **नई शिक्षा नीति, 2019**
  - नई शिक्षा नीति की आवश्यकता
  - मसौदा राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2019 की प्रमुख सिफारिशें
  - नीति से संबंधित विवाद तथा चुनौतियाँ
- **आर्थिक आधार पर आरक्षण**
  - 103वें संविधान संशोधन की प्रमुख बातें
  - आर्थिक आधार पर आरक्षण के विपक्ष में तर्क
  - आर्थिक आधार पर आरक्षण के पक्ष में तर्क
- **निजी नौकरियों में स्थानीय लोगों हेतु आरक्षण**
  - आरक्षण की मांग के कारण
  - आरक्षण के पक्ष में तर्क
  - आरक्षण के विपक्ष में तर्क
- **मिशन शक्ति**
  - मिशन शक्ति क्या है?
  - एंटी सैटेलाइट और अंतरिक्ष हथियार
  - अंतरिक्ष कचरे की समस्या
  - अंतरिक्ष कचरा क्या है?
  - मिशन शक्ति से उत्पन्न चुनौतियाँ
- **यूनिवर्सल बेसिक इनकम**
  - यूबीआई क्या है?
  - यूबीआई के पक्ष एवं विपक्ष में तर्क
  - यूबीआई के संभावित लाभ
  - यूबीआई से जुड़े अनुत्तरित प्रश्न
- **राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर : अद्यतनीकरण**
  - अद्यतनीकरण की आवश्यकता क्यों?
  - एनआरसी अद्यतनीकरण की प्रक्रिया
  - एनआरसी से संबंधित विवाद एवं चिंताएँ
  - एनआरसी प्रक्रिया के पक्ष में तर्क
- **नागरिकता संशोधन अधिनियम, 2019**
  - अधिनियम की प्रमुख विशेषताएँ
  - संशोधन के पक्ष एवं विपक्ष में तर्क
- **सबरीमाला विवाद**
  - सबरीमाला मंदिर की पृष्ठभूमि
  - मंदिरों में प्रवेश संबंधी पक्ष एवं विपक्ष में तर्क
- **तीन तलाक**
- **जलवायु परिवर्तन- एक वैश्विक चुनौती**
  - क्या है जलवायु परिवर्तन?
  - जलवायु परिवर्तन के कारण
  - जलवायु परिवर्तन के प्रभाव
  - जलवायु परिवर्तन और खाद्य सुरक्षा
  - जलवायु परिवर्तन से निपटने हेतु वैश्विक प्रयास
  - जलवायु परिवर्तन और भारत के प्रयास
- **एशिया पैसिफिक इकॉनामिक कोऑपरेशन (एपेक)**
  - एपेक का महत्त्व
  - एपेक सदस्यता के भारत को लाभ
  - भारत की एपेक सदस्यता से सदस्य राष्ट्रों को लाभ
  - भारत की एपेक सदस्यता में अवरोध

- क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक साझेदारी (RCEP)
  - भारत के लिये RCEP का महत्त्व
  - RCEP से संबंधित भारत की चिंताएँ
- आसियान आउटलुक ऑन द इंडो-पैसिफिक एवं भारत
  - आसियान आउटलुक ऑन द इंडो-पैसिफिक के प्रमुख तत्त्व
  - भारत की एशिया प्रशांत-क्षेत्र में चुनौतियाँ
- अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र
  - महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र के प्रमुख उद्देश्य
  - महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र से संबंधित चुनौतियाँ
  - अफ्रीकी महाद्वीपीय मुक्त व्यापार क्षेत्र का भारत के लिये महत्त्व
  - AfCFTA के महत्तम लाभ के लिये भारत क्या कर सकता है?
- चाबहार बंदरगाह
  - चाबहार बंदरगाह की अवस्थिति
  - भारत के लिये बंदरगाह का महत्त्व
  - भू-राजनीतिक महत्त्व
  - आर्थिक महत्त्व
- भारत-मध्य एशिया वार्त्ता
  - महत्त्वपूर्ण घोषणाएँ
  - भारत को वार्त्ता से संभावित लाभ
  - भारत-मध्य एशिया संबंधों में चुनौतियाँ
- अफगान शांति प्रक्रिया
  - अफगान शांति प्रक्रिया एवं भारत
  - भारत की अफगान शांति प्रक्रिया वार्त्ता के लिये '3 नई रेड लाइन्स' और उनका महत्त्व
  - भारत के लिये अफगानिस्तान शांति प्रक्रिया का महत्त्व
  - अफगानिस्तान शांति प्रक्रिया में चुनौतियाँ
- बिम्सटेक पर भारत का बढ़ता भरोसा
  - सार्क से बिम्सटेक की दिशा में प्रयाण
  - बिम्सटेक
  - बिम्सटेक के संदर्भ में किये गए प्रयास
  - बिम्सटेक और हिंद-प्रशांत कूटनीति
- हिंद-प्रशांत और भारत
  - हिंद-प्रशांत क्षेत्र के लिये भारत का दृष्टिकोण
  - भारत की इंडो-पैसिफिक क्षेत्र संबंधी पहलें
  - इंडो-पैसिफिक के संदर्भ में चुनौतियाँ
  - चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में समाधान
- संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् (UNSC)
  - सुरक्षा परिषद् के कार्य एवं शक्तियाँ
  - सुरक्षा परिषद् में सुधार क्यों आवश्यक हैं?
  - सुरक्षा परिषद् में क्या सुधार होने चाहिये?
  - सुधारों में अवरोध
  - भारत को सुरक्षा परिषद् में सदस्यता क्यों मिलनी चाहिये?
  - सुरक्षा परिषद् में सदस्यता के लिये भारत के प्रयास
  - भारत की सुरक्षा परिषद् सदस्यता में चुनौतियाँ
- पड़ोसी प्रथम की नीति : समग्र अवलोकन
  - वर्तमान सरकार की 'पड़ोसी प्रथम' की नीति : भिन्नता या निरंतरता
  - भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध
  - पड़ोसी देशों के साथ संबंध अनुकूल न होने के कारण
- ओआईसी और भारत
  - ऑर्गेनाइज़ेशन ऑफ इस्लामिक कोऑपरेशन (OIC)
  - ओआईसी और भारत
  - ओआईसी में शामिल होने से भारत पर प्रभाव
  - इस्लामिक देशों के साथ संबंधों में बढ़ती निकटता
- भारत-रूस संबंध
  - भारत के लिये रूस का महत्त्व
  - भारत-रूस संबंधों में चुनौतियाँ
- भारत-श्रीलंका संबंध
  - भारत-श्रीलंका संबंध : हालिया परिदृश्य
  - भारत के लिये श्रीलंका का महत्त्व
  - श्रीलंकाई नृजातीय संकट और भारत
  - भारत-श्रीलंका के मध्य विवाद के क्षेत्र
  - श्रीलंका में चीन की उपस्थिति व भारत पर प्रभाव
- भारत-मालदीव संबंध
  - मालदीव भारत के लिये क्यों महत्त्वपूर्ण
  - चुनौतियाँ
- ईरान-अमेरिका संघर्ष
  - 'पी 5 + 1' एवं ईरान डील
  - अमेरिका द्वारा डील से पीछे हटने के कारण
  - अमेरिका के फैसले पर वैश्विक प्रतिक्रिया
  - विश्व पर प्रभाव
  - भारत पर असर
  - ईरान का मध्य एशियाई कनेक्टिविटी के लिये महत्त्व
- आतंकवाद : एक वैश्विक समस्या
  - क्या है आतंकवाद?
  - भारत में आतंकवाद
  - आतंकवाद के कारण
  - अंतर्राष्ट्रीय आतंकवाद पर व्यापक अभिसमय (CCIT)
  - CCIT के उद्देश्य
  - भारत में आतंकवाद को रोकने के लिये किये गए बड़े बदलाव
  - कौन से कड़े कदम उठाए जाने चाहिये?

3. सांख्यिकी 179-225
  - वर्णनात्मक विधि द्वारा आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण
  - सारणी के रूप में आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण
  - आरेख द्वारा आँकड़ों की प्रस्तुति
  - आलेख द्वारा आँकड़ों की प्रस्तुति

4. भारतीय राजव्यवस्था 226-351
- राजव्यवस्था का परिचय
  - प्रमुख शासन प्रणालियाँ
  - लोकतंत्र एवं इसके प्रकार
- संविधान की प्रमुख विशेषताएँ
  - भारतीय संविधान की प्रमुख विशेषताएँ
  - संविधान की आवश्यकता क्यों?
  - भारतीय संविधान मौलिक या नकल
- संविधान की प्रस्तावना/उद्देशिका
  - प्रस्तावना क्या है?
  - प्रस्तावना में उल्लिखित शब्द

- प्रस्तावना की उपयोगिता
- प्रस्तावना संविधान का अंग है या नहीं?
- प्रस्तावना परिवर्तनीय/संशोधनीय है या नहीं?
- प्रस्तावना की उपयोगिता

- **मूल अधिकार**
  - मूल अधिकार क्या हैं?
  - भारत में मूल अधिकारों की आवश्यकता क्यों?
  - संवैधानिक उपबंध
  - मूल अधिकारों की विशेषताएँ
  - मूल अधिकारों से संबंधित अनुच्छेद
  - आर्थिक आधार पर सामान्य वर्ग हेतु 10 प्रतिशत आरक्षण
  - उच्चतम न्यायालय व उच्च न्यायालय द्वारा रिट जारी करने के अधिकार में अंतर
  - मूल अधिकारों से संबंधित अन्य उपबंध
  - मूल अधिकार में संशोधन
  - क्या मौलिक अधिकार आत्यंतिक हैं?
- **राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व**
  - राज्य की नीति के निदेशक तत्त्व
  - राज्य के नीति निदेशक तत्त्वों का वर्गीकरण
  - राज्य के नीति-निदेशक तत्त्वों में किये गए संशोधन
  - संविधान के अन्य भागों में उल्लिखित निदेशक तत्त्व
  - निदेशक तत्त्वों की आलोचना
  - मूल अधिकार व निदेशक तत्त्वों में टकराव
  - मूल अधिकार एवं राज्य के नीति निदेशक तत्त्वों में अंतर
- **मूल कर्त्तव्य**
  - भारतीय संविधान में मूल कर्त्तव्यों का इतिहास
  - मूल कर्त्तव्यों को प्रभावी बनाने के उपाय
  - मूल कर्त्तव्यों की प्रवर्तनीयता
  - मूल कर्त्तव्यों के संदर्भ में किये गए सरकारी प्रयास
  - मूल कर्त्तव्यों का महत्त्व
- **कार्यपालिका**
  - संघ की कार्यपालिका
  - भारत का उपराष्ट्रपति
  - भारत का प्रधानमंत्री
  - केंद्रीय मंत्रिपरिषद्
  - भारत का महान्यायवादी
  - राज्य की कार्यपालिका
  - राज्यपाल
  - मुख्यमंत्री
  - राज्य मंत्रिपरिषद्
  - महाधिवक्ता
- **न्यायपालिका**
  - न्याय क्या है?
  - न्यायपालिका के विभिन्न स्तर
  - अधीनस्थ न्यायपालिका एवं अन्य उप-स्तर
  - न्यायिक प्रणाली में सुधार हेतु उपाय
- **केंद्र-राज्य संबंध**
  - केंद्र-राज्य संबंधों से संबंधित संवैधानिक प्रावधान
  - केंद्र-राज्य संबंधों में तनाव के प्रमुख कारण
  - सरकारिया आयोग
  - पुंछी आयोग
- **भारतीय संघीय व्यवस्था**
  - संघात्मक सरकार
  - भारतीय संविधान में संघीय व्यवस्था संबंधित प्रावधान
  - भारतीय संघीय व्यवस्था से संबंधित संस्थाएँ
  - भारतीय राजनीति में संघवाद का विकास
  - भारतीय संघवाद के समक्ष उपस्थित प्रमुख चुनौतियाँ
  - भारतीय संघवाद की वर्तमान स्थिति
- **भारतीय राजनीतिक परिदृश्य**
  - भारतीय राजनीति में धर्म, जाति, भाषा एवं जेंडर की भूमिका
  - नागरिक समाज एवं राजनीतिक आंदोलन
  - राष्ट्रीय अखंडता एवं सुरक्षा से जुड़े मुद्दे
  - सामाजिक-राजनीतिक संघर्ष के संभावित क्षेत्र
  - बिहार की राजनीति में जाति एवं धर्म की भूमिका
- **भारत में निर्वाचन, मतदान व्यवहार एवं दलीय व्यवस्था**
  - चुनाव
  - संवैधानिक उपबंध
  - निर्वाचन आयोग
  - राज्य निर्वाचन आयोग
  - भारत में निर्वाचन प्रणाली
  - भारत में दलों का वर्गीकरण
- **स्थानीय स्वशासन का आशय**
  - भारत में स्थानीय स्वशासन का विकास
  - बिहार में महिला सशक्तीकरण और पंचायती राज
- **आपात उपबंध**
- **संविधान संशोधन : एक नज़र में**
- **समसामयिक मुद्दे**
- **विधि-विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) संशोधन अधिनियम, 2019**
  - विधि-विरुद्ध क्रियाकलाप (निवारण) अधिनियम 1967 क्या है?
  - संशोधन की आवश्यकता तथा अपेक्षित लाभ
- **सूचना का अधिकार (संशोधन) अधिनियम, 2019**
  - सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005
  - क्या सूचना देने से इनकार किया जा सकता है?
- **लोकपाल**
  - महत्त्वपूर्ण बिंदु
  - कौन हो सकता है लोकपाल?
  - नवगठित लोकपाल के बारे में
  - विवाद का कारण
  - लोकपाल एवं लोकायुक्त अधिनियम, 2013
- **समान नागरिक संहिता**
  - समान नागरिक संहिता का अर्थ
  - समान नागरिक संहिता का विश्लेषण
  - विधि आयोग की प्रमुख सिफारिशें
- **वन नेशन वन राशन कार्ड**
- **निजी क्षेत्र की नौकरियों में स्थानीय लोगों हेतु आरक्षण**
  - नौकरियों में कोटा (आरक्षण) की मांग के कारण

- **मानवाधिकार संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2019 तथा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC)**
  - भारत में मानवाधिकार की वर्तमान स्थिति
  - मानवाधिकार (Human Rights)
  - राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC)
  - मानवाधिकार संरक्षण (संशोधन) अधिनियम, 2019 की प्रमुख विशेषताएँ
  - ज़रूरी बदलाव अभी भी उपेक्षित
- **सोशल मीडिया विनियमन**
  - सोशल मीडिया और भारत
  - सोशल मीडिया का दुरुपयोग
  - मौजूदा सोशल मीडिया और फेक न्यूज़ संबंधी नियम कानून
  - आधार और सोशल मीडिया
  - निजता का अधिकार बनाम सोशल मीडिया विनियमन

5. विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी.. 352-456

- **भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी**
  - भारतीय विज्ञान : विकास के विभिन्न चरण व उपलब्धियाँ
  - भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी का आधारभूत ढाँचा
  - विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवोन्मेष नीति-2013 की मुख्य विशेषताएँ
  - पंचवर्षीय योजनाओं के दौर में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी क्षेत्र में प्रगति
  - प्रौद्योगिकी विज़न 2035
- **अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी**
  - भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम
  - भारतीय अंतरिक्ष कार्यक्रम के छ: दशकों की प्रमुख उपलब्धियाँ
  - इसरो (ISRO)
  - इसरो के प्रमुख केंद्र
  - प्रक्षेपण यान प्रौद्योगिकी
  - भारत का उपग्रह प्रक्षेपण विकास कार्यक्रम
  - भारत के भविष्य के प्रक्षेपण यान
  - भारत के विभिन्न उपग्रह
  - भारतीय क्षेत्रीय नौवहन प्रणाली
  - अंतरिक्ष प्रदूषण
  - सामाजिक उत्थान में अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी
  - स्पेस विज़न इंडिया 2025
- **जैव प्रौद्योगिकी**
  - जैव प्रौद्योगिकी के सिद्धांत
  - जैव प्रौद्योगिकी की विभिन्न तकनीकें
  - आर.एन.ए. हस्तक्षेप
  - स्टेम सेल या स्तंभ कोशिका
  - जीनोम मानचित्रण
  - फॉरेंसिक साइंस
  - बायोमेट्रिक्स
  - जैव प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग
  - जैव आतंकवाद
  - भारत में जैव प्रौद्योगिकी
  - डी.एन.ए. प्रौद्योगिकी (उपयोग एवं अनुप्रयोग) विनियमन विधेयक, 2019
  - राष्ट्रीय जैव प्रौद्योगिकी विकास रणनीति, 2015-2020
- **नैनो प्रौद्योगिकी**
  - कुछ महत्त्वपूर्ण नैनो उत्पाद
  - नैनो प्रौद्योगिकी के अनुप्रयोग
  - भारत में नैनो प्रौद्योगिकी
  - नैनो प्रौद्योगिकी में कुछ अन्य विकास
- **सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी**
  - संचार
  - सॉफ्टवेयर
  - सुपर कंप्यूटर
  - इंटरनेट
  - 3D प्रिंटिंग
  - ई-कचरा या ई-वेस्ट
  - नेट निरपेक्षता या नेट न्यूट्रैलिटी
  - साइबर अपराध
  - डिजिटल इंडिया कार्यक्रम
  - टेलीविज़न
- **रोबोटिक्स एवं कृत्रिम बुद्धिमत्ता**
  - रोबोटिक्स
  - रोबोट्स के वर्गीकरण
  - रोबोटिक्स के अनुप्रयोग
  - भारत में रोबोटिक्स
  - रोबोटिक्स संबद्ध नैतिक बहस
  - कृत्रिम बुद्धिमत्ता
- **ऊर्जा**
  - ऊर्जा स्रोतों का वर्गीकरण
  - नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (MNRE) की कुछ प्रमुख संस्थाएँ
  - नाभिकीय प्रौद्योगिकी
- **लेज़र प्रौद्योगिकी**
  - लेज़र की संरचना
  - भारत में लेज़र प्रौद्योगिकी
- **विविध**
  - बौद्धिक संपदा
  - व्यापार संबद्ध बौद्धिक संपदा अधिकार-ट्रिप्स
- **आधुनिक प्रौद्योगिकियाँ**
  - बिग डेटा तकनीक
  - ब्लॉकचेन तकनीक
  - हाइपरलूप परिवहन तकनीक
- **समसामयिक मुद्दे**
- **डेटा का स्थानीयकरण**
  - डेटा का स्थानीयकरण क्या है?
  - भारत में डेटा स्थानीयकरण के प्रयास
  - क्यों महत्त्वपूर्ण है डेटा का स्थानीयकरण?
  - डेटा स्थानीयकरण के विपक्ष में तर्क
- **ई-सिगरेट पर प्रतिबंध**
  - ई-सिगरेट क्या है?
  - ई-सिगरेट पर प्रतिबंध लगाने के पक्ष में तर्क
  - ई-सिगरेट पर प्रतिबंध लगाने के विपक्ष में तर्क
- **ईट राइट इंडिया मूवमेंट**
  - आंदोलन के संबंध में अन्य जानकारी
  - खाद्य सुरक्षा मित्र (FSM) योजना

- भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण (FSSAI)
- ईट राईट मूवमेंट का महत्त्व

○ **प्रोटॉन उपचार**
- प्रोटॉन थेरेपी
- प्रोटॉन थेरेपी के लाभ
- प्रोटॉन थेरेपी से संबंध चुनौतियाँ

○ **गगनयान**
- गगनयान मिशन के लाभ एवं चुनौतियाँ
- व्योममित्र

6. अर्थव्यवस्था.. 457-523

○ **अर्थव्यवस्था**

○ **भूमि सुधार**
- बिहार सरकार द्वारा भूमि सुधार की दिशा में किये गए प्रयास
- भारत में भूमि सुधारों की आलोचना
- भूमि सुधार हेतु सुझाव

○ **कृषि क्षेत्र**
- बिहार की अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का महत्त्व
- बिहार में कृषि का स्वरूप
- बिहार के कृषि क्षेत्र की समस्याएँ
- कृषि क्षेत्र में सुधार
- बिहार के कृषि जलवायु क्षेत्रों का विवरण
- प्रथम कृषि रोड मैप
- कृषि विपणन
- विश्व व्यापार संगठन एवं कृषि सब्सिडी

○ **औद्योगीकरण**
- औद्योगिक विकास का महत्त्व
- औद्योगिक नीतियाँ
- बिहार में कृषि आधारित उद्योग
- खनिज पर आधारित उद्योग
- बिहार औद्योगिक निवेश संवर्द्धन नीति, 2016
- बिहार स्टार्ट-अप नीति, 2017
- राज्य में लघु एवं कुटीर उद्योग
- बिहार में स्थापित केंद्र सरकार द्वारा नियंत्रित सार्वजनिक औद्योगिक इकाई

○ **पर्यटन**
- राज्य में पर्यटन एवं पर्यटक स्थल का स्वरूप

○ **आर्थिक नियोजन**
- नियोजन के उद्देश्य
- भारतीय आर्थिक नियोजन की प्रमुख विशेषताएँ
- आर्थिक नियोजन की सफलता के लिये आवश्यक तत्त्व
- योजना आयोग
- नीति आयोग
- भारत में पंचवर्षीय योजनाएँ-लक्ष्य, उपलब्धियाँ एवं उद्देश्य
- नियोजन की असफलताएँ
- पंचवर्षीय योजना की समाप्ति

○ **गरीबी**
- गरीबी के प्रकार
- गरीबी/निर्धनता के कारण
- निर्धनता जाल/दुश्चक्र
- बिहार और भारत के लिये बहुआयामी गरीबी अनुपात
- भारत में गरीबी को मापने से संबंधित समितियाँ
- भारत में गरीबी अनुमान
- गरीबी के दुष्परिणाम
- गरीबी को दूर करने के उपाय
- गरीबी निवारण के लिये तीन दृष्टिकोण
- निर्धनता उन्मूलन हेतु सरकार द्वारा चलाए गए महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम
- बिहार ग्रामीण जीविका परियोजना (जीविका)
- गृहभूमि वितरण

○ **बेरोज़गारी**
- भारत में बेरोज़गारी का वर्गीकरण/प्रकार
- भारत में बेरोज़गारी के कारण
- बेरोज़गारी के परिणाम
- भारत में बेरोज़गारी दूर करने के संबंध में सुझाव
- बेरोज़गारी से संबंधित सरकारी योजनाएँ एवं कार्यक्रम

○ **खाद्य सुरक्षा**
- खाद्य सुरक्षा की परिभाषा
- खाद्य सुरक्षा का मुद्दा महत्त्वपूर्ण क्यों
- खाद्य सुरक्षा नेटवर्क
- खाद्य सुरक्षा से संबद्ध कार्यक्रम
- बिहार में खाद्य सुरक्षा की स्थिति
- भारतीय खाद्य निगम की भूमिका और पुनर्गठन पर शांता कुमार समिति की रिपोर्ट
- बफर स्टॉक

○ **वस्तु एवं सेवा कर (जीएसटी)**
- जीएसटी के अवयव
- भुगतान की प्रक्रिया
- जीएसटी की आवश्यकता
- जीएसटी के लाभ
- भारत की संघीय व्यवस्था एवं जीएसटी
- जीएसटी परिषद्

○ **समसामयिक मुद्दे**

○ **रणनीतिक विनिवेश**
- रणनीतिक विनिवेश क्या है?
- रणनीतिक विनिवेश प्रक्रिया में संशोधन
- रणनीतिक विनिवेश की आवश्यकता
- रणनीतिक विनिवेश के विपक्ष में तर्क

○ **गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियाँ**
- गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियाँ
- गैर-निष्पादनकारी परिसंपत्तियों के बढ़ने के कारण
- भारतीय अर्थव्यवस्था तथा बैंकिंग क्षेत्र पर बढ़ते एनपीए का प्रभाव
- एनपीए की समस्या के निवारण के प्रयास

○ **बैंकों का विलय**

○ **20वीं पशुधन गणना**

○ **दिवाला और दिवालियापन संहिता, 2016**

○ **स्मार्ट सिटी मिशन**
- स्मार्ट सिटी के अंतर्गत प्रमुख अवसंरचना तत्त्व
- स्मार्ट सिटी हेतु स्मार्ट समाधान
- स्मार्ट सिटी मिशन के संबंध में चुनौतियाँ

- चिटफंड्स (संशोधन) अधिनियम, 2019
  - चिटफंड्स क्या होते हैं?
  - अधिनियम के मुख्य प्रावधान
  - चिटफंड्स का महत्त्व
  - चिटफंड्स से संबंधित समस्याएँ
- आर्थिक समीक्षा 2019-20 एवं संघीय बजट 2020-21

7. बिहार का भूगोल 524-571

- भौगोलिक स्थिति एवं उच्चावच
  - बिहार की भौगोलिक स्थिति
  - भूगर्भिक संरचना
  - बिहार में प्राकृतिक उच्चावच
- जलवायु एवं मृदा
  - जलवायु
  - मृदा/मिट्टी
  - बिहार में मृदा से संबंधित समस्याएँ
- अपवाह तंत्र एवं सिंचाई
  - नदियाँ
  - झील
  - सिंचाई
  - बिहार में सिंचाई व्यवस्था
  - बिहार में जल प्रबंधन
  - बिहार के विकास में नदी घाटी परियोजनाओं की भूमिका
- कृषि एवं पशुपालन
  - कृषि
  - बिहार में हरित क्रांति
  - बिहार में कृषि क्षेत्र की समस्याएँ
  - जैविक खेती
  - बिहार में कृषि जलवायु क्षेत्र
  - पशुपालन
  - बिहार में मत्स्य उत्पादन
- खनिज संसाधन
  - बिहार के प्रमुख खनिज
  - बिहार में खनिज आधारित उद्योग
  - बिहार को खनिज से प्राप्त होने वाले राजस्व
- ऊर्जा संसाधन
  - वर्तमान ऊर्जा परिदृश्य एवं संभावनाएँ
  - बिहार में विद्युत क्षेत्र की संस्थागत संरचना
  - नवीकरणीय ऊर्जा विकास अभिकरण (ब्रेडा)
  - राज्य की प्रमुख तापीय संयंत्र परियोजनाएँ
  - नई योजनाएँ/परियोजनाएँ
- परिवहन एवं संचार
  - सड़क परिवहन
  - रेल परिवहन
  - वायु परिवहन
  - जल परिवहन
  - संचार व्यवस्था
- वन एवं वन्यजीव अभयारण्य
  - बिहार में वन क्षेत्र का वितरण
  - प्रमुख वन्यजीव अभयारण्य
  - बिहार राज्य वन विकास अभिकरण
  - वन नीति
  - वन आधारित राज्य प्रायोजित योजनाएँ
  - वानिकी कार्यक्रम
  - मुख्यमंत्री शहरी वानिकी योजना
  - नमामि गंगे योजना के तहत वृक्षारोपण
- बिहार में आपदा प्रबंधन
  - प्राधिकरण का लक्ष्य, उद्देश्य एवं भूमिका
  - आपदा जोखिम न्यूनीकरण में प्राधिकरण की भूमिका
  - बिहार में बाढ़ और बाढ़ प्रबंधन
  - बिहार में सूखा
- जलवायु परिवर्तन
  - जलवायु परिवर्तन के कारक
  - जलवायु परिवर्तन का मानव एवं पारितंत्र पर प्रभाव
  - वैश्विक तापन
  - जलवायु परिवर्तन के प्रभाव
  - जलवायु परिवर्तन शमन के लिये रणनीतियाँ
  - कार्बन ट्रेडिंग
  - भारत एवं जलवायु परिवर्तन
  - बिहार सरकार द्वारा जलवायु परिवर्तन की दिशा में उठाए जा रहे कदम
  - कृषि रोड मैप 2017-22 के तहत कार्यक्रम
- पर्यावरणीय प्रदूषण
  - प्रदूषक
  - वायु प्रदूषण
  - जल प्रदूषण
  - समुद्री प्रदूषण
  - ध्वनि प्रदूषण
  - ठोस अपशिष्ट
  - ई-अपशिष्ट
  - प्लास्टिक प्रदूषण
  - मृदा प्रदूषण
- भारत वन स्थिति रिपोर्ट, 2019
  - चैंपियन एवं सेठ वर्गीकरण
  - वनों की स्थिति से संबंधित राज्यवार आँकड़े
  - रिपोर्ट से संबंधित अन्य तथ्य

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न और अभ्यास-प्रश्न....... 572-581

1 कला-संस्कृति एवं भारतीय इतिहास (Art & Culture and Indian History)

कला एवं संस्कृति

मौर्य कला

बिहार में हड़प्पा काल के तुरंत बाद मौर्य काल में "कला एवं स्थापत्य" का प्रभाव स्पष्टत: दिखाई दिया। जिसे मुख्यत: दो रूपों में विभाजित किया जा सकता है। जैसे-

(i) दरबारी अथवा राजकीय कला (ii) लोककला

(i) दरबारी अथवा राजकीय कला

राजप्रासाद

मौर्यकालीन स्थापत्य की प्रथम कृति राजधानी पाटलिपुत्र में अवस्थित चंद्रगुप्त मौर्य का राजप्रासाद तथा उसका दुर्गीकरण है, जिसकी चर्चा कौटिल्य के 'अर्थशास्त्र' एवं मेगस्थनीज़ की 'इंडिका' में है। पाटलिपुत्र गंगा एवं सोन नदियों के संगम पर स्थित था। इसके चारों ओर 700 फीट चौड़ी खाई का उल्लेख मिलता है। इस नगर को लकड़ी की दीवार से घेरा गया था। मेगस्थनीज़ के अनुसार, "पाटलिपुत्र में चंद्रगुप्त मौर्य का महल समकालीन 'सूसा' साम्राज्य के प्रासाद को भी मात देता है।" मौर्य काल के विशाल नगरों के काष्ठ निर्मित होने का मुख्य कारण गंगा के मैदान के करीब पाषाण का अभाव तथा काष्ठ की अधिकता थी। वर्तमान में 80 स्तंभ युक्त चंद्रगुप्त मौर्य के महल का पुरातात्त्विक अवशेष पटना के 'कुम्हरार' नामक जगह पर प्राप्त हुआ है। अशोक के समय आते-आते मौर्यकला के अनेकों स्मारक एवं स्तंभ प्राप्त होने लगे। अत: तत्कालीन समय में कलाकृतियों को मुख्यत: चार भागों में बाँटा जा सकता है-

(a) स्तंभ (b) स्तूप
(c) वेदिका (d) गुहा-विहार

(a) स्तंभ

मौर्य काल के सर्वोत्कृष्ट नमूने अशोक के एकाश्म स्तंभ हैं, जो उसने धम्म प्रचार के लिये देश के विभिन्न भागों में स्थापित किये थे। इनकी संख्या लगभग 30 है और ये चुनार (वाराणसी के निकट) के लाल बलुआ पत्थर से बने हुए हैं। इन स्तंभों पर एक खास तरह की पॉलिश की गई है, जिसे 'ओप' कहते हैं। इससे इनकी चमक धातु जैसी हो गई, किंतु पॉलिश की यह कला समय के साथ लुप्त हो गई। इन स्तंभों की ऊँचाई 35 से 50 फुट तक तथा वज़न 50 टन तक है। ये एक ही शिला को काटकर बनाए गए हैं, जिसमें कोई जोड़ नहीं है। ये स्तंभ आधार की तरफ मोटे तथा ऊपर की तरफ क्रमश: पतले होते गए हैं। स्तंभ के मुख्य भाग को 'लाट' कहते हैं और ऊपरी हिस्से को 'शीर्ष'। मौर्यकालीन स्तंभ में लाट के शीर्ष पर इकहरी या दोहरी मेखला होती थी। मेखला के ऊपर की आकृति अवांगमुखी कमल या उल्टे खिले कमल की तरह बनाई गई थी। उसके ऊपर चौकीनुमा स्वरूप बनाकर उस पर पशुओं की आकृति बनाई जाती थी।

मौर्यकालीन महत्त्वपूर्ण स्तंभ

- **लौरिया नंदनगढ़ का स्तंभ:** यह अब तक प्राप्त सभी स्तंभों में सर्वाधिक सुंदर स्तंभ है। इसके शीर्ष पर सिंह की प्रतिमा है, आसन के चारों तरफ हंस की पंक्ति उत्कीर्ण है।
- **रामपुरवा के स्तंभ:** लौरिया नंदनगढ़ के समीप रामपुरवा में भी अशोक के शिला स्तंभ, पशु प्रतिमा और स्तंभ से संयुक्त शीर्ष भाग उपलब्ध हुए। अशोक के समय में निर्मित धर्म स्तंभों पर धर्म की शिक्षाएँ उत्कीर्ण की गई हैं।
- **दिल्ली का टोपरा स्तंभ:** यह फिरोज़शाह की लाट के नाम से प्रसिद्ध है। पहले यह स्तंभ दिल्ली से 90 मील दूर अंबाला ज़िले में यमुना के किनारे टोपरा में था। फिरोज़शाह तुगलक द्वारा इसे दिल्ली लाया गया। अब यह दिल्ली दरवाज़े पर फिरोज़शाह कोटला के नाम से प्रसिद्ध है।
- **दिल्ली में मेरठ स्तंभ:** इसे भी फिरोज़शाह तुगलक द्वारा मेरठ से दिल्ली लाया गया था। 1713-1719 ई. में बादशाह फर्रुखसियर के बारूदखाने में आग लग जाने के कारण यह स्तंभ गिरकर ध्वस्त हो गया था, किंतु बाद में इसी ध्वस्त स्तंभ को पुन: प्रतिष्ठित किया गया।
- **लौरिया अरराज स्तंभ:** बिहार के चंपारण ज़िले में राधिया ग्राम से 2.5 मील दूर दक्षिण-पूर्व में अरराज महादेव का मंदिर है। उसी के निकट लौरिया में यह स्तंभ खड़ा है। इस पर अशोक के लेख उत्कीर्ण हैं।
- **इलाहाबाद स्तंभ:** इस पर अशोक के दो लेख उत्कीर्ण हैं, इस पर समुद्रगुप्त की प्रशस्ति भी खुदी हुई है।
- **रूम्मिनदेई स्तंभ:** नेपाल के रूम्मिनदेई नामक स्थान पर अशोक का एक प्राचीन स्तंभ मिला है और इस पर लिखा है, "यहाँ भगवान बुद्ध का जन्म हुआ था।" इस प्रकार बुद्ध के जन्म स्थान के निर्णय में यह अभिलेख महत्त्वपूर्ण है। रूम्मिनदेई स्तंभ के उत्तर-पश्चिम में 13 मील दूर निग्लीवा झील के समीप निग्लीवा ग्राम में यह स्तंभ खड़ा है। इस पर उत्कीर्ण लेख में अशोक द्वारा कनकमुनि बुद्ध के स्तूप की मरम्मत कराने का संकेत मिलता है।

आधुनिक भारत का इतिहास

ब्रिटिश शासन के विरुद्ध नागरिक एवं जनजातीय विद्रोह

ब्रिटिश शासन ने भारत की राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन किये तथा ब्रिटिश नीतियों ने भारत को इंग्लैंड का उपनिवेश बना दिया, जिसके परिणामस्वरूप ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध अनेक आंदोलन, विद्रोह तथा सैनिक विप्लव हुए। इन सभी आंदोलनों तथा विद्रोहों के प्रमुख कारणों में भारतीय शासन में विदेशी हस्तक्षेप, प्रशासनिक परिवर्तनों का होना, अर्थव्यवस्था का नष्ट होना, ग्रामीण निर्भरता की समाप्ति तथा अंग्रेज़ों की करों से संबंधित अनेक भू-राजस्व नीतियाँ आदि शामिल थे। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह तथा आंदोलन उनकी बर्बरता तथा निरंकुशता का परिणाम थे, जिसने भारतीय जन-मानस को झकझोर दिया। इन आंदोलनों/विद्रोहों को इस प्रकार समझा जा सकता है-

नागरिक एवं जनजातीय विद्रोह

ब्रिटिश हुकूमत और भारतीय शोषकों, जैसे- ज़मींदार, राजा-रजवाड़े, कुलीन वर्ग आदि के खिलाफ 18वीं सदी से ही सामान्य नागरिक, कृषक तथा जनजातीय लोग अपना असंतोष प्रकट करने लगे थे। कृषक आंदोलनों का कारण ब्रिटिशों की भू-नीतियाँ एवं राजस्व की दमनात्मक वसूली आदि थी। यद्यपि अधिकांश विद्रोहों को पुलिस तथा सेना की मदद से दर्ज कराया। जनजातीय विद्रोह का कारण उनके परंपरागत अधिकारों का हनन था। आदिवासियों का वन पर परंपरागत अधिकार था परंतु सरकार ने वन नीति के तहत उसे सरकारी संपत्ति घोषित कर दिया। आबकारी कर, नमक कर जैसे करों की दमनकारी वसूली भी इन विद्रोहों का कारण बनी। ईसाई धर्म प्रचारकों ने भारतीय संस्कृति पर प्रहार किया। फलत: समय-समय पर विभिन्न जन विद्रोह हुए। भौगोलिक स्थिति के अनुसार नागरिक व जनजातीय विद्रोहों को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

नागरिक एवं जनजातीय विद्रोह

पूर्वी भारत तथा बंगाल के विद्रोह	पश्चिमी भारत के विद्रोह	दक्षिण भारत के विद्रोह
संन्यासी विद्रोह	रामोसी विद्रोह	विजयनगरम् के राजा का विद्रोह
कोल विद्रोह	कच्छ का विद्रोह	वेलूथंपी का विद्रोह
हूल/संथाल विद्रोह	भील विद्रोह	बुंदेला विद्रोह
अहोम विद्रोह	गडकरी विद्रोह	
खासी विद्रोह		
पागलपंथी विद्रोह		
फराज़ी विद्रोह		
मुंडा विद्रोह		

पूर्वी भारत तथा बंगाल के विद्रोह

संन्यासी विद्रोह (1770-1820, कुछ स्रोतों में 1763-1800)

प्रमुख क्षेत्र - बंगाल

प्रमुख नेता - गिरि संप्रदाय के संन्यासी

- बंगाल में अंग्रेज़ी राज्य स्थापित होने से वहाँ एक नई अर्थव्यवस्था की शुरुआत हुई, जिसके कारण बंगाल के ज़मींदार, कृषक तथा शिल्पी आदि की स्थिति दयनीय हो गई। बंगाल में पड़े (1770 ई. के) भीषण अकाल तथा कंपनी के पदाधिकारियों की कठोरता को लोगों ने विदेशी राज्य की देन समझा।
- 1770 ई. के इस भीषण अकाल ने बंगाल के निवासियों को त्रस्त कर दिया। इससे पूर्व अंग्रेज़ों द्वारा कई प्रतिबंध लगाए गए थे, जिसने बंगाल को जकड़-सा दिया था। तीर्थस्थलों की यात्रा पर लगे प्रतिबंधों से दुखी होकर **शंकराचार्य** के अनुयायी **गिरि संप्रदाय के संन्यासियों** ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध सशस्त्र विद्रोह प्रारंभ कर दिया।
- संन्यासी विद्रोह की शुरुआत 1760 ई. से मानी जाती है, जो लगभग 1800 ई. तक चला।
- संन्यासी लोगों ने जनता के साथ मिलकर अन्याय के विरुद्ध लड़ने की परंपरा को बनाए रखते हुए सबसे पहले कंपनी की कोठियों तथा कोषों पर आक्रमण किया। इस आंदोलन में बेदखल किये गए किसान, विघटित सिपाही, सत्ताच्युत ज़मींदार तथा धार्मिक नेता शामिल थे। आंदोलनकारियों ने बलपूर्वक धन वसूला तथा अंग्रेज़ी फैक्टरियों में लूटपाट की। वॉरेन हेस्टिंग्स ने इस विद्रोह को दबाने के लिये दमन का सहारा लिया तथा आंदोलन को कुचल दिया। बंकिम चंद्र चटर्जी द्वारा लिखित उपन्यास 'आनंदमठ' का कथानक संन्यासी विद्रोह पर आधारित है।

कोल विद्रोह (1831–32 ई.)

प्रमुख क्षेत्र - छोटानागपुर

प्रमुख नेता - बुद्धो भगत और गंगा नारायण

- मैदानी लोगों द्वारा कोल कहे जाने वाले छोटानागपुर क्षेत्र में मुंडा, ओरॉंव, हो आदि जनजातियाँ निवास करती थीं। छोटानागपुर के कोलों के विद्रोह के प्रमुख कारण इस प्रकार हैं-
  - 1822 ई. में ब्रिटिश सरकार द्वारा चावल से बनने वाली शराब, जिसे आदिवासी लोग उपयोग में लाते थे, पर उत्पादन शुल्क का लगाया जाना।
  - अंग्रेज़ों की स्थायी बंदोबस्त व्यवस्था ने भी आदिवासियों में असंतोष को बढ़ाया।
  - ब्रिटिश सरकार द्वारा कोलों की भूमि छीनकर मुस्लिम कृषकों तथा सिक्खों को दे दी गई।
  - 1831 ई. में 'बुद्धो भगत' के नेतृत्व में कोलों ने कई विदेशियों अथवा बाहर के लोगों को या तो जला दिया या उनकी हत्या कर

प्रमुख विचारक

महात्मा गांधी

महात्मा गांधी नव्य वेदांत दर्शन की परंपरा में आने वाले प्रमुख विचारक हैं। नव्य वेदांत के अन्य व्याख्याकारों में स्वामी विवेकानंद और रवींद्रनाथ टैगोर प्रमुख हैं।

नव्य वेदांत जगत को भ्रम या असार मानने के स्थान पर ईश्वर की अभिव्यक्ति मानता है। प्रकृति के कण-कण में ईश्वर व्याप्त है और इस रूप में प्रत्येक मानव में भी ईश्वर है। इसीलिये नव्य वेदांत के अधिकांश विचारक मानव सेवा को ही प्रभु सेवा मानते हैं। इस प्रकार, नव्य वेदांत अपने आध्यात्मिक आधार के बाद भी एक मानववादी तथा इहलोकवादी दर्शन है। गांधी इसके मुख्य विचारक हैं जिनका वर्तमान भारतीय जनमानस पर सबसे गहरा प्रभाव है।

पृष्ठभूमि

महात्मा गांधी का दर्शन अनेक विचारधाराओं से मिलकर बना है। महात्मा गांधी पर सर्वाधिक प्रभाव उपनिषद् तथा गीता का है। उपनिषद से उन्होंने *'ईशावास्यमिदं सर्वं'* मंत्र ग्रहण किया और गीता से 'स्वधर्म' की अवधारणा ली है। जैन धर्म के पंचव्रतों का उन पर गहरा प्रभाव है। इसके अतिरिक्त बौद्ध तथा योग दर्शन का भी उन पर प्रभाव है।

गांधीजी ने पश्चिमी धर्मों व दर्शन से भी बहुत कुछ सीखा। ईसा मसीह से उन्होंने 'करुणा' का विचार लिया। एक गाल पर तमाचा मारने पर दूसरा गाल आगे कर देने की सीख भी ईसा की है। जॉन रस्किन की 'अनटु दिस लास्ट' (Unto this last) का प्रभाव उनके हिंद स्वराज पर देखा जा सकता है। गांधी के 'अराजकतावादी' विचारों पर हेनरी डेविड थोरो तथा टॉलस्टॉय का प्रभाव है।

पंचव्रत पर गांधीजी के विचार

अहिंसा

महात्मा गांधी उपनिषद् दर्शन पर आधारित *'ईशावास्यमिदं सर्वं'* के विचार को मानते हैं जिसका अर्थ है कि जगत के कण-कण में ईश्वर की उपस्थिति है। ईश्वर ही अलग-अलग तरीके से विभिन्न मनुष्यों, अन्य प्राणियों, पेड़-पौधों तथा भौतिक वस्तुओं में व्यक्त होता है। अहिंसा सिर्फ राजनीतिक आंदोलन का अस्त्र नहीं है बल्कि वह नैतिक जीवन जीने का मूलभूत तरीका है।

अहिंसा का अर्थ नकारात्मक भी है और सकारात्मक भी। मन, वचन, कर्म से किसी भी प्राणी को कष्ट न पहुँचाना और कष्ट पहुँचाने का विचार भी न लाना इसका नकारात्मक अर्थ है जबकि सकारात्मक अर्थ में सभी प्राणियों के प्रति प्रेम, दया, सहानुभूति और सेवाभाव रखना शामिल है।

महात्मा गांधी की अहिंसा की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-

- अहिंसा सिर्फ आदर्श नहीं है। यह मानव जाति का प्राकृतिक नियम है। जिस प्रकार हिंसा पशु समुदाय का प्राकृतिक नियम है वैसे ही अहिंसा मानव समुदाय का।
- अहिंसा के पूर्ण पालन के लिये ईश्वर में अटूट विश्वास ज़रूरी है। ईश्वरीय विश्वास से मनुष्य समझ जाता है कि जिसके साथ वह हिंसा करना चाहता है वह भी ईश्वर का ही अभिव्यक्त रूप है।
- अहिंसा अव्यावहारिक नहीं है बल्कि वह एकमात्र व्यावहारिक मार्ग है। हिंसा से तात्कालिक और एक पक्षीय समाधान हो सकते हैं किंतु स्थाई तथा सर्वस्वीकृत समाधान सिर्फ अहिंसा से ही संभव है।
- अहिंसा और कायरता समानार्थक नहीं हैं। अगर हमें हिंसा और कायरता में से किसी एक को ही चुनना हो, तो हिंसा को चुनना बेहतर है।

अहिंसा के अपवाद

गांधी की अहिंसा जैनों की अहिंसा की तुलना में लचीली और व्यावहारिक है। उन्होंने खुद स्पष्ट किया है कि किन परिस्थितियों में अहिंसा के नियम का उल्लंघन किया जाना उचित है-

- हिंसक पशुओं, रोग के कीटाणुओं, फसल को नष्ट करने वाले कीड़ों की हत्या करना उचित है। लेकिन ऐसा सिर्फ समाज के हित में किया जाए; किसी अन्य कारण से नहीं।
- अगर कोई प्राणी असहनीय दर्द झेल रहा हो और उसकी मुक्ति का कोई और रास्ता न हो, तो उसके जीवन को समाप्त कर देना उचित है। लेकिन ऐसा सिर्फ उस प्राणी के हित में किया जाए; किसी अन्य के हित में नहीं। इस विचार में दया मृत्यु (यूथनेशिया) के प्रति समर्थन दिखता है।
- चिकित्सक द्वारा शल्य चिकित्सा के लिये की जाने वाली हिंसा उचित है, यदि यह केवल मरीज़ के हित में की जाए।
- किसी प्राणी के नैतिक, आध्यात्मिक या भौतिक विकास के लिये उसे कष्ट पहुँचाना अहिंसा का उल्लंघन नहीं है (जैसे माता-पिता द्वारा बच्चों में नैतिक मूल्य विकसित करने के लिये श्रम करने का आदेश देना आदि)।

सत्य (सत्याग्रह)

गांधीजी ने सत्य शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया है- सीमित तथा व्यापक। व्यापक अर्थ में सत्य और ईश्वर समानार्थक हैं। ईश्वर में निष्ठा रखते हुए नैतिक जीवन जीना सत्यपूर्ण जीवन है। इसी दृष्टिकोण से गांधीजी ने अपनी आत्मकथा को 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' (My Experiments with Truth) कहा है।

सीमित रूप में सत्य का अर्थ है- मन, वचन, कर्म से छल करने से दूर रहना। जो तथ्य जिस रूप में देखा, समझा या जाना गया है, उसे उसी रूप में बिना कोई संशोधन किये व्यक्त करना 'सत्य' है।

सत्य के मार्ग पर चलना कठिन अवश्य है किंतु ज़रूरी है। कठिन इसलिये है कि यह अत्यंत साहस की मांग करता है और ज़रूरी इसलिये है क्योंकि नैतिक रूप से सही सामाजिक संबंध इसी आधार पर स्थापित किये जा सकते हैं।

2 राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय घटनाक्रम (National and International Events)

जल शक्ति अभियान

भारत सरकार ने देश में बढ़ते हुए जल संकट को देखते हुए ऊर्जा सुरक्षा की तर्ज़ पर जल सुरक्षा के लिये 1 जुलाई, 2019 को महत्त्वाकांक्षी योजना जल शक्ति अभियान की शुरुआत की। 'संचय जल, बेहतर कल' थीम के साथ शुरू होने वाला 'जल शक्ति अभियान' दो चरणों में लागू किया गया, इसके तहत पहला चरण 1 जुलाई से 15 सितंबर तक जबकि दूसरा चरण 1 अक्तूबर से 30 नवंबर तक चला। इस दौरान पानी की कमी का सामना कर रहे ज़िलों में जल संरक्षण और रेन वाटर हार्वेस्टिंग के लिये अभियान चलाया गया। इसके तहत परंपरागत तालाबों और जलाशयों का संरक्षण, भूजल रिचार्ज, वाटरशेड डेवलपमेंट और वृक्षारोपण पर ज़ोर दिया जाएगा।

भारत में जल उपलब्धता की स्थिति

- नीति आयोग की रिपोर्ट के अनुसार, लगभग 600 मिलियन भारतीय "गंभीर जल-संकट" की समस्या से गुज़र रहे हैं और लगभग 75% आवासों में पेयजल तक की सुविधा उपलब्ध नहीं है।
- भारत में जल की वार्षिक प्रति व्यक्ति उपलब्धता वर्ष 2001 में 1816 क्यूबिक मीटर थी जो कि वर्ष 2011 में घटकर 1544 क्यूबिक मीटर हो गई। यह स्थिति देश में जल की बढ़ती खपत के विपरीत है क्योंकि वर्ष 2030 तक देश में जल की खपत दोगुनी होने की संभावना है।
- सेंट्रल वॉटर कमीशन की बीते वर्ष की रिपोर्ट के अनुसार देश भर के 91 बड़े जलाशयों में 59 प्रतिशत पानी सूख चुका है। तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक, तेलंगाना, आंध्र प्रदेश के 31 जलाशयों में पानी 80 प्रतिशत तक कम हो गया है। तेलंगाना के दो बड़े जलाशयों में 62 प्रतिशत पानी बचा है, जबकि केरल के सभी बड़े जलाशयों में पानी 50 प्रतिशत तक कम हो चुका है। केरल का दूसरा सबसे बड़ा जलाशय 94 प्रतिशत तक सूख गया है, जो एक भयावह स्थिति है।
- गौरतलब है कि बीते कुछ सालों में देश के कई हिस्सों में भूजल स्तर काफी नीचे चला गया है, जो चिंता का विषय है। मौजूदा समय में चेन्नई इस बात का सबसे बड़ा उदाहरण है, जहाँ पर जलाशय, झीलें सूख गई हैं और भूजल स्तर भी काफी नीचे है। यही कारण है कि वहाँ पर पेयजल का संकट देखने को मिल रहा है।

प्रमुख बिंदु

- कार्मिक लोक शिकायत और पेंशन मंत्रालय द्वारा जारी अधिसूचना के अनुसार, इस अभियान में अंतरिक्ष, पेट्रोलियम एवं रक्षा क्षेत्रों से अधिकारियों को शामिल किया जाएगा।
- इस अभियान के तहत गंभीर निचले भूजल स्तर का सामना कर रहे देश के कुल 256 ज़िलों के सर्वाधिक प्रभावित 1592 ब्लॉकों को प्राथमिकता के आधार पर चुना गया है, जहाँ भूमिगत जलस्तर का अतिदोहन किया गया है। दक्षिण पश्चिम मानसून के आगमन के साथ जल संचय के लाभों के लिये 1 जुलाई से 15 सितंबर, 2019 तक का समय तय किया गया जबकि लौटते हुए मानसून यानी मानसून के निवर्तन काल में तमिलनाडु और अंडमान निकोबार जैसे क्षेत्रों और पूर्वी तटीय राज्यों में जल सुरक्षा के लिये 1 अक्तूबर से 30 नवंबर, 2019 तक की अवधि निर्धारित की गई।
- बेहतर फसल विकल्पों एवं सिंचाई के लिये जल के अधिक कुशल उपयोग को बढ़ावा देने हेतु किसान विज्ञान केंद्र द्वारा मेले का आयोजन किया जाएगा ताकि इसके माध्यम से जल संरक्षण प्रयासों को दिशा प्रदान की जा सके।
- स्कूली क्षेत्रों, स्वच्छाग्रहियों, स्वयं सहायता समूहों, पंचायती राज संस्थाओं के सदस्यों सहित व्यापक जनभागीदारी को जल शक्ति अभियान के साथ शामिल करने के लिये ज़ोर दिया जा रहा है।
- ब्लॉक या शहर में भूजल पुनर्भरण हेतु कम-से-कम एक शहरी जल निकाय योजनाए विकसित की जाएगी।
- राष्ट्रीय स्तर पर टीमों की सहायता करने हेतु वैज्ञानिकों एवं IITs की भी सहायता ली जाएगी।
- जल शक्ति अभियान का उद्देश्य महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी योजना और ग्रामीण विकास मंत्रालय के एकीकृत जल संभरण प्रबंधन कार्यक्रम के साथ-साथ जल शक्ति मंत्रालय और पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा चलाई जा रही मौजूदा जल पुनर्भरण और वनीकरण योजनाओं के तहत जल संचयन, संरक्षण और पुनर्भरण गतिविधियों में तेज़ी लाना है।
- मनरेगा के तहत यह नियम निर्देशित है कि इसका 60 प्रतिशत व्यय राष्ट्रीय संसाधन प्रबंधन पर किया जाएगा और इसी के अनुसार इसमें जल संरक्षण हेतु खेतों में तालाबों का निर्माण, वर्षा जल संचयन, जल का पुनरुपयोग, जल संभर विकास और गहन वनीकरण का लक्ष्य भी रखा गया है।

3 सांख्यिकी
(Statistics)

आँकड़ों का निर्वचन

विभिन्न प्रेक्षणों से प्राप्त आँकड़ों को एकत्र कर एक व्यवस्थित रूप में प्रदर्शित अथवा प्रस्तुत करना ही आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण है। इस प्रकार एकत्र आँकड़ों के प्रस्तुतीकरण से वृहद् आँकड़ों को आसानी से समझा एवं प्रयोग में लाया जा सकता है।

आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण निम्न प्रकार से किया जा सकता है–

वर्णनात्मक विधि द्वारा आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण

इस विधि में किसी प्रेक्षण के आँकड़ों को भाषा के रूप में दिया जाता है। इस विधि से प्रस्तुत आँकड़ों से कोई निष्कर्ष निकालने में काफी समय लगता है। सामान्यत: अंकगणित आदि के प्रश्नों में इसका प्रयोग देखा जा सकता है।

सारणी के रूप में आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण

इस विधि में वर्गीकृत आँकड़ों को पंक्तियों तथा स्तंभों की सहायता से दर्शाया जाता है। सारणी आँकड़ों को संक्षिप्त रूप प्रदान करती है, साथ ही सारणी के प्रयोग से आँकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन सरल बनता है, जिससे विश्लेषण में आसानी होती है।

सारणीयन *(Tabulation)*

पंक्तियों तथा स्तंभों के रूप में आँकड़ों का प्रस्तुतीकरण ही सारणीयन कहलाता है।

सारणियाँ तीन प्रकार की हो सकती हैं–

1. **सरल सारणी:** किसी एक गुण पर आधारित आँकड़ों को सरल सारणी द्वारा प्रदर्शित किया जाता है, जैसे– कक्षा के विद्यार्थियों के गणित में प्राप्तांक:

अनुक्रमांक	–	–	–	–	–
प्राप्तांक	–	–	–	–	–

2. **द्विगुणी सारणी:** इसमें एक ही आँकड़ों के दो गुणों को प्रदर्शित किया जाता है, जैसे– किसी देश की विभिन्न जनगणना के आँकड़ों से प्राप्त सारणी:

वर्ष	जनसंख्या		
	शिक्षित	अशिक्षित	योग

3. **बहुगुणी सारणी:** इस सारणी में एक ही प्रकार के आँकड़ों के विभिन्न गुणों को प्रदर्शित किया जाता है, जैसे– किसी देश की जनगणना के आँकड़ों से प्राप्त सारणी:

आयु वर्ग	पुरुष		महिला		ट्रांसजेंडर	
	साक्षर	निरक्षर	साक्षर	निरक्षर	साक्षर	निरक्षर
योग	–	–	–	–	–	–

आरेख द्वारा आँकड़ों की प्रस्तुति

इस विधि में आँकड़ों को उनके निकटतम रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस विधि में आँकड़ों की तुलना काफी आसान हो जाती है। परंतु निकटतम रूप होने के कारण आँकड़ों का गणितीय उपयोग संभव नहीं हो पाता।

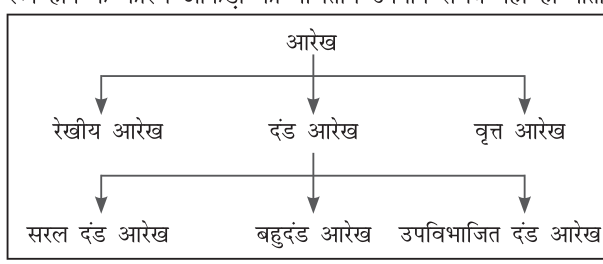

रेखीय आरेख *(Line Graph)*

रेखीय आरेख आँकड़ों के एक गुण को प्रदर्शित करता है। इसमें समान दूरी पर विभिन्न रेखाएँ स्थित होती हैं, जो आँकड़ों के मान को दर्शाती हैं।

उदाहरण के लिये– एक क्रिकेट मैच में भारत के सभी खिलाड़ियों द्वारा बनाए गए रनों का आरेख:

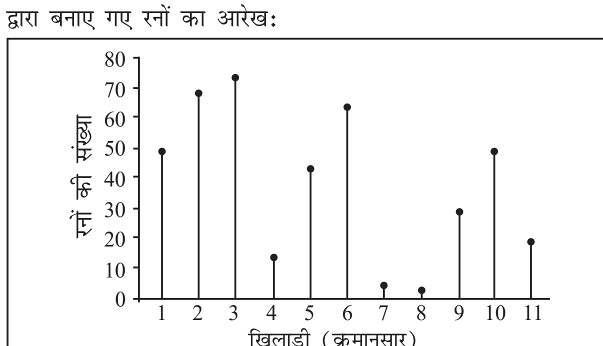

117. ∴ कर्मचारी प्रत्येक महीने ₹ 10 हज़ार बचाता है, तो कुल बचत होगा–

जनवरी में बचत = ₹ 10 हज़ार

फरवरी में बचत = 10 + 10 = ₹ 20 हज़ार

मार्च में बचत = 20 + 10 = ₹ 30 हज़ार

अप्रैल में बचत = 30 + 10 = ₹ 40 हज़ार

मई में बचत = 40 + 10 = ₹ 50 हज़ार

जून में बचत = 50 + 10 = ₹ 60 हज़ार

जुलाई में बचत = 60 + 10 = ₹ 70 हज़ार

∴ यहाँ वेतन के बचत में प्रत्येक माह वृद्धि हो रही है

∵ 'से कम' तोरण वक्र बनेगा।

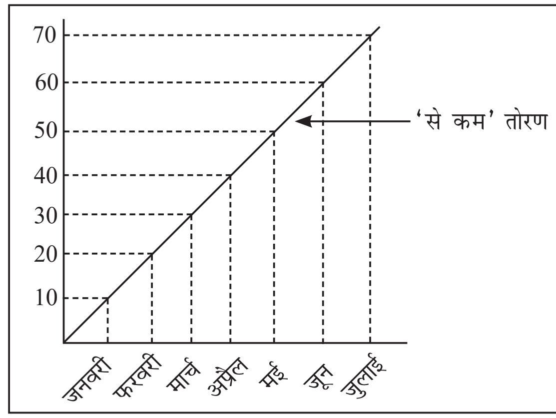

Think IAS
दृष्टि The Vision
Think Drishti

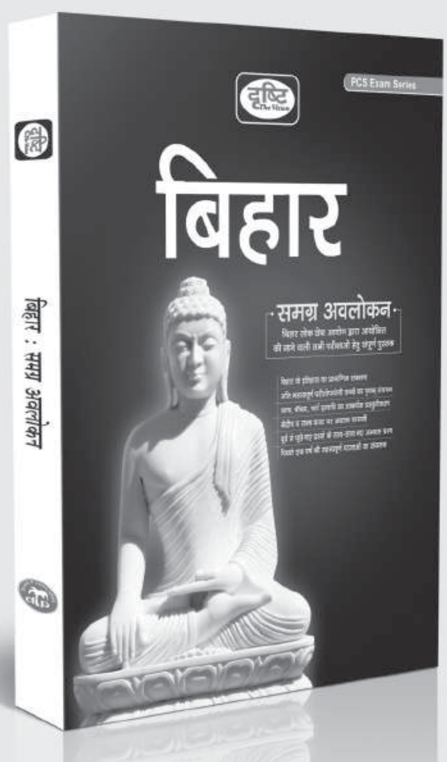

दृष्टि पब्लिकेशन्स
की शानदार प्रस्तुति
प्रमुख आकर्षण
- बिहार के इतिहास का प्रामाणिक संकलन
- अति महत्त्वपूर्ण परीक्षोपयोगी तथ्यों का पृथक् संचयन
- ग्राफ, बॉक्स, चार्ट इत्यादि का आकर्षक प्रस्तुतीकरण
- केंद्रीय व राज्य बजट पर अद्यतन सामग्री
- पूर्व में पूछे गए प्रश्नों के साथ-साथ नए अभ्यास प्रश्न
- पिछले एक वर्ष की महत्त्वपूर्ण घटनाओं का संकलन

4

भारतीय राजव्यवस्था
(Indian Polity)

राजव्यवस्था का परिचय

राज्य राजव्यवस्था से जुड़ी प्राथमिक एवं अमूर्त अवधारणा है। यूँ तो 'राज्य' शब्द का प्रयोग विभिन्न प्रांतों, जैसे- मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश तथा बिहार आदि को सूचित करने के लिये होता है परंतु इसका वास्तविक अर्थ समाज की 'राजनीतिक संरचना' से होता है। उदाहरणार्थ भारत सरकार, राज्य सरकारें, न्यायपालिका, विधायिका, नौकरशाही से जुड़े अधिकारी आदि की समग्र संरचना ही 'राज्य' कहलाती है।

किसी भी 'राज्य' में चार तत्त्व अनिवार्य रूप से विद्यमान होते हैं- **भू-भाग, जनसंख्या, सरकार और संप्रभुता।** इनमें से किसी भी तत्त्व का अभाव होने पर 'राज्य' की अवधारणा निरर्थक हो जाएगी। **सरकार,** राज्य की व्यावहारिक एवं मूर्त अभिव्यक्ति है। **संप्रभुता** राज्य का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण तत्त्व है।

प्रमुख शासन प्रणालियाँ

सामान्यत: विभिन्न देशों की शासन प्रणालियों में अंतर उनकी सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि के कारण होता है। विश्व की प्रमुख शासन प्रणालियों का वर्गीकरण निम्नलिखित आधार पर किया जा सकता है-

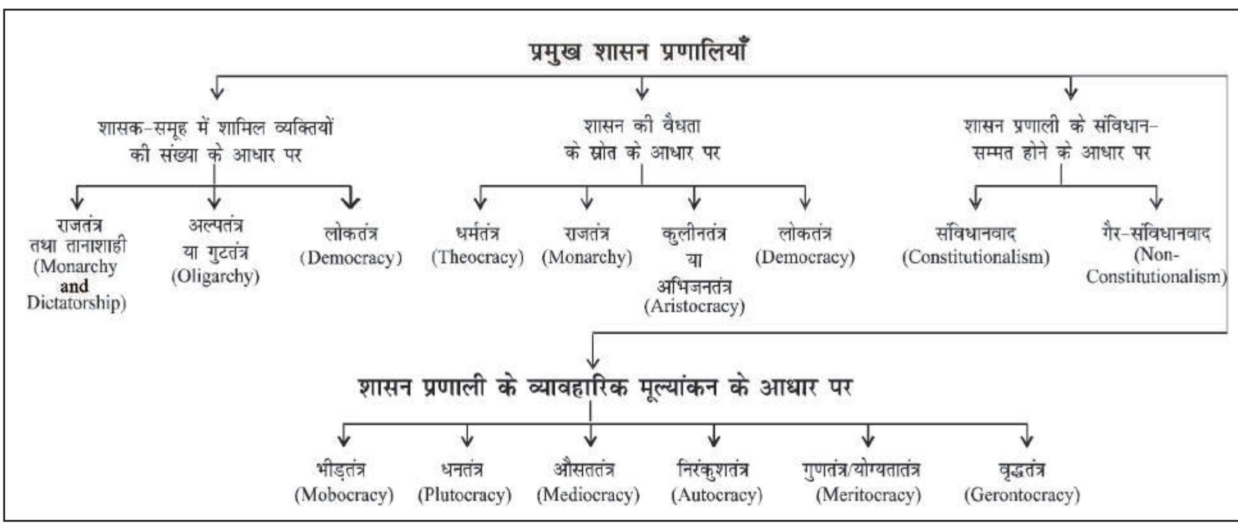

भारतीय राजव्यवस्था शासन इन प्रमुख प्रणालियों में से किसके नज़दीक है इसे निम्न प्रकार से समझा जा सकता है-

- भारत में **लोकतंत्र** है परंतु अधिकांश जनता के अशिक्षित और गरीब होने के कारण सत्ता की प्रतिस्पर्द्धा दो-तीन छोटे-छोटे गुटों के बीच होती है, अत: कुछ लोग इसे **अल्पतंत्र या गुटतंत्र** कहते हैं।
- भारत ने शासन प्रणाली की संविधानवादी व्यवस्था को अपनाया है और कई मामलों में सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के रक्षक की भूमिका ठोस तरीके से निभाई है। जैसे- संविधान के मूल ढाँचे से संबंधित वाद (केशवानंद भारती वाद, 1973)।
- जहाँ जनता का मत, व्यवहार, पारंपरिक मान्यताओं और भावनाओं से संचालित होने के कारण इसे **भीड़तंत्र** भी कहा जाता है, तो वहीं नेताओं का वैचारिक व योग्यता स्तर इसे **औसततंत्र** सिद्ध करता है। चुनाव प्रक्रिया के अत्यधिक महँगी होने तथा राज्य द्वारा चुनाव खर्च वहन न करने के कारण यह **धनतंत्र** के नज़दीक माना जा सकता है और भारतीय राजनेताओं की औसत उम्र के आधार पर आलोचक इसे **वृद्धतंत्र** भी कह सकते हैं। इसके अतिरिक्त आरक्षण के अलावा प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यतानुसार आगे बढ़ने का पूरा अवसर मिलता है। अत: कुछ सीमाओं के साथ यह **योग्यतातंत्र/गुणतंत्र** भी है। भारतीय राजव्यवस्था में **निरंकुशतंत्र** के लक्षण काफी कम हैं। विपक्ष और जनमत का दबाव, जनता के मौलिक अधिकार, न्यायपालिका की न्यायिक पुनरावलोकन की शक्ति आदि इसे 'निरंकुशतंत्र' बनने से रोकता है।

5 विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (Science & Technology)

भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी (Science and Technology in India)

भारतीय विज्ञान : विकास के विभिन्न चरण व उपलब्धियाँ (Indian Science : Different Stages of Development and Achievements)

प्राचीन भारतीय विज्ञान

- ज्ञातव्य है कि हड़प्पा व मोहनजोदड़ो सभ्यताओं से विज्ञान का प्रयोग शुरू हो चुका था। उनके भवन निर्माण, धातु विज्ञान, वस्त्र निर्माण, परिवहन व्यवस्था आदि उन्नत दशा में विकसित हो चुके थे। हड़प्पा, मोहनजोदड़ो, लोथल, कालीबंगा, चन्हूदड़ो, बनवाली, सुरकोटदा आदि स्थानों पर हुई खुदाई में मिले नगरों के खंडहर इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।
- वैदिक काल से भारत में विज्ञान के सैद्धांतिक पहलुओं की जानकारी एवं उनके प्रयोग के नए युग की शुरुआत होती है। इस समय के एक प्रसिद्ध ग्रंथ 'शुल्व-सूत्र' में यज्ञशालाओं तथा हवनकुंडों की ज्यामितीय आकृतियों का सचित्र वर्णन मिलता है। प्राचीन काल में गणित, ज्योतिष, रसायन, खगोल, चिकित्सा, धातु आदि क्षेत्रों में विज्ञान ने खूब उन्नति की। इस काल में आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, बोधायन, चरक, सुश्रुत, कणाद से लेकर नागार्जुन तक वैज्ञानिकों की एक लंबी फेहरिस्त देखने को मिलती है।
- आर्यभट्ट ने खगोल विज्ञान को नई ऊँचाइयाँ दीं। उनके 'आर्यभट्टीयम्' ग्रंथ में कुल 121 श्लोक हैं। आर्यभट्ट ने वर्गमूल, घनमूल, त्रिभुज का क्षेत्रफल, पिरामिड का आयतन, वृत्त का क्षेत्रफल आदि संबंधी अवधारणाएँ दीं। उन्होंने शून्य को केवल संख्या नहीं, बल्कि एक चिह्न के रूप में व्याख्यायित किया।
- वराहमिहिर ने खगोलशास्त्र संबंधी प्रसिद्ध रचना 'बृहत्संहिता' में बता दिया था कि चंद्रमा पृथ्वी के चारों ओर परिक्रमा करता है। वराहमिहिर ने अपने ज्योतिष ग्रंथ 'पंचसिद्धांतिका' में सर्वप्रथम बताया कि अयनांश (Amount of Precession) का मान 50.32 सेकंड के बराबर होता है। उन्होंने आर्यभट्ट द्वारा प्रतिपादित 'ज्या सारणी' को और अधिक परिशुद्ध किया। उन्होंने शून्य एवं ऋणात्मक संख्याओं के बीजगणितीय गुणों को परिभाषित किया।

मध्यकालीन तथा आधुनिक भारतीय विज्ञान

- प्रारंभिक मध्य युग में भारत के विभिन्न गणितज्ञों ने गणित के क्षेत्र में विशेष कार्य किये हैं। श्रीधर का 'गणितसार' और भास्कराचार्य द्वारा रचित 'लीलावती' ने गणित के क्षेत्र में 'मील का पत्थर' स्थापित किया। 'गणितसार' में गुणा, भाग, संख्या, घन, वर्गमूल, क्षेत्रमिति आदि के विषय में पर्याप्त जानकारी दी गई है।
- 'लीलावती' नामक ग्रंथ में अंकगणित, बीजगणित तथा अन्य का विवेचन किया गया है। यह ग्रंथ एक 'पाटीगणित' (ज्ञात अंकों से अज्ञात अंकों को जानने की विद्या) है, जिसमें त्रिकोणमिति, त्रिभुज तथा चतुर्भुज का क्षेत्रफल, पाई का मान, गोलों के तल का क्षेत्रफल तथा आयतन आदि के बारे में जानकारी (प्रश्न-उत्तर के रूप में) दी गई है।
- मध्यकाल में विभिन्न बीमारियों पर विशेष शोध प्रबंधन करने तथा बीमारियों के निदान के लिये नाड़ी व मूत्र परीक्षण की व्यवस्था थी। शारंगधर रचित 'शारंगधर संहिता' में अफीम को औषध के रूप में उपयोग किये जाने की बात कही गई है। जबकि वहीं लगभग 17वीं शताब्दी में 'मुहम्मद मुनीन' द्वारा रचित फारसी ग्रंथ 'तुहफत-उल-मुमिनीन' में विभिन्न चिकित्सकों के मतों का वर्णन किया गया है।
- 15 अगस्त, 1947 से पहले भारत ब्रिटेन के अधीन था। अत: ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति और उसके वैज्ञानिक एवं प्रौद्योगिकीय विकास का असर भारत में भी होना स्वाभाविक था। ब्रिटिश शासन के अधीन रहते हुए अधिकतर अनुसंधान अंग्रेज़ों द्वारा ही किये गए।
- भारत में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की असल शुरुआत तो 1940 के दशक से ही मानी जाती है जब 26 सितंबर, 1942 को डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर की कोशिशों के चलते वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR) की स्थापना दिल्ली में एक स्वायत्त संस्था के रूप में हुई। अत: इसी विकास ने 'लैब टू लैंड' जैसी अवधारणाओं को साकार करने में योगदान दिया।
- 1938 के 'नेहरू ड्राफ्ट' में भी विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विकास को ही भारत के विकास के साथ जोड़ा गया, जो स्वतंत्रता के बाद एक राष्ट्रीय आवश्यकता के रूप में सामने आया। अत: इसी के परिणामस्वरूप डॉ. शांतिस्वरूप भटनागर और भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की वैज्ञानिक सोच और संयुक्त प्रयासों से जनवरी 1955 में डॉ. भटनागर की मृत्यु तक देश के विभिन्न स्थानों पर किसी-न-किसी उद्योग से जुड़ी लगभग 15 अनुसंधान प्रयोगशालाओं की स्थापना हो चुकी थी।
- उद्योग क्षेत्र के विकास हेतु भारत सरकार द्वारा लगातार इस दिशा में आधुनिक विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उपयोग को बल दिया जा रहा है। वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद् (CSIR) और

6

अर्थव्यवस्था
(Economy)

अर्थव्यवस्था

अर्थशास्त्र में आर्थिक गतिविधियों से संबंधित सिद्धांतों, नियमों इत्यादि का वर्णन होता है, जबकि अर्थव्यवस्था में इन्हीं सिद्धांतों का व्यावहारिक प्रयोग किया जाता है। आर्थिक सिद्धांतों एवं नियमों की वास्तविक परख अर्थव्यवस्था में ही होती है। जब हम किसी देश अथवा राज्य को उसकी समस्त आर्थिक क्रियाओं के संदर्भ में परिभाषित करते हैं तो उसे 'अर्थव्यवस्था' कहते हैं।

अर्थव्यवस्था के क्षेत्र/क्षेत्रक

अर्थव्यवस्था की आर्थिक गतिविधियों को निम्नलिखित श्रेणियों अथवा क्षेत्रों में बाँटा गया है-

प्राथमिक क्षेत्र

अर्थव्यवस्था का वह क्षेत्र जहाँ प्राकृतिक संसाधनों को उत्पाद के रूप में प्राप्त किया जाता है अर्थात् इसके अंतर्गत अर्थव्यवस्था के प्राकृतिक क्षेत्रों का लेखांकन किया जाता है, 'प्राथमिक क्षेत्र' (Primary Sector) कहलाता है। इसे 'कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र' भी कहा जाता है। इसमें निम्नलिखित आर्थिक क्रियाओं को सम्मिलित किया जाता है-

- कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र
- मत्स्य पालन
- वानिकी
- खनन एवं उत्खनन

द्वितीयक क्षेत्र

अर्थव्यवस्था का वह क्षेत्र जो प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों को अपनी गतिविधियों में कच्चे माल की तरह उपयोग करता है, 'द्वितीयक क्षेत्र' (Secondary Sector) कहलाता है। इस क्षेत्र के अंतर्गत अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र के उत्पादों के प्रयोग से विनिर्मित वस्तुओं के उत्पाद का लेखांकन किया जाता है। इसे 'औद्योगिक क्षेत्र' भी कहा जाता है। इसमें निम्नलिखित आर्थिक गतिविधियाँ शामिल होती हैं-

- विनिर्माण
- निर्माण
- गैस, जल तथा विद्युत आपूर्ति

तृतीयक क्षेत्र

तृतीयक क्षेत्र (Tertiary Sector) में विभिन्न प्रकार की सेवाओं का उत्पादन किया जाता है, इसलिये इस क्षेत्र को 'सेवा क्षेत्र' भी कहा जाता है। यह क्षेत्र अर्थव्यवस्था के प्राथमिक क्षेत्र एवं द्वितीयक क्षेत्र को अपनी सेवाएँ प्रदान करता है। इसमें निम्नलिखित आर्थिक क्रियाएँ शामिल होती हैं-

- व्यापार, होटल तथा रेस्तराँ
- परिवहन, संचार तथा भंडारण
- वित्तीय सेवाएँ - बैंकिंग, बीमा
- रियल एस्टेट
- लोक प्रशासन एवं प्रतिरक्षा
- चिकित्सा
- अन्य सेवाएँ

चतुर्थक क्षेत्र

चतुर्थक क्षेत्र (Quaternary Sector) तृतीयक क्षेत्र का एक उन्नत रूप है, क्योंकि इसमें ज्ञान क्षेत्र से संबंधित सेवाएँ शामिल की जाती हैं। वर्तमान में सूचना आधारित सेवाओं की मांग में बहुत अधिक वृद्धि हो रही है। चतुर्थक क्षेत्र से संबंधित गतिविधियों में मुख्यत: सूचनाओं का संग्रहण करना, सूचनाओं का अध्ययन एवं विश्लेषण करना, आवश्यकतानुसार सूचनाओं को प्रस्तुत करना इत्यादि शामिल किया जाता है।

पंचक क्षेत्र

पंचक क्षेत्र (Quinary Sector) उच्च किस्म की सेवाओं से संबंधित है। इस क्षेत्र में गोल्ड कॉलर प्रोफेशनल्स को शामिल किया जाता है, जो अपने-अपने क्षेत्र के उच्च विशेषज्ञ होते हैं। ये अपने से संबंधित क्षेत्रों में नीति-निर्माण तथा निर्णय-निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये नए-नए विचारों, तकनीकों, शोध एवं अनुसंधानों एवं भविष्य के लिये बेहतर संभावनाओं पर कार्य करते हैं। इनमें मुख्यतया उच्च स्तर के सरकारी अधिकारियों, कंपनियों एवं व्यवसायों के उच्च प्रबंधकों, शोधकर्त्ताओं एवं वैज्ञानिकों, वित्तीय प्रबंधकों, कानूनी सलाहकारों इत्यादि को शामिल किया जाता है।

अर्थव्यवस्था का वर्गीकरण/स्वरूप

विश्व में अर्थव्यवस्था के वर्गीकरण का कोई एक निश्चित पैमाना नहीं है। विभिन्न अर्थव्यवस्थाओं को भिन्न-भिन्न मानदंडों के अनुसार निम्न आधारों पर वर्गीकृत किया गया है इसमें मुख्यत: राज्य/सरकार की भूमिका के आधार पर अर्थव्यवस्था के वर्गीकरण का विस्तृत अध्ययन किया जाता है-

7

बिहार का भूगोल
(Geography of Bihar)

भौगोलिक स्थिति एवं उच्चावच

किसी भी राज्य के भौगोलिक परिदृश्य को जानने के लिये उसकी भौगोलिक स्थिति व उच्चावच को जानना आवश्यक होता है। इस संदर्भ में बिहार की भौगोलिक स्थिति व उच्चावच में काफी विविधता पाई जाती है। इनमें पर्वत, पठार, मैदान और अन्य भौगोलिक उच्चावच मिलकर बिहार की भौगोलिक संरचना को एक विशेष रूप प्रदान करते हैं।

बिहार की भौगोलिक स्थिति

- बिहार भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्र में स्थित एक भू-आविष्ट राज्य है। इसके उत्तर में नेपाल, दक्षिण में झारखंड, पूरब में पश्चिम बंगाल तथा पश्चिम में उत्तर प्रदेश स्थित है।
- बिहार राज्य का भौगोलिक विस्तार 24°20'50" उत्तरी अक्षांश से 27°31'15" उत्तरी अक्षांश तथा 83°19'50" पूर्वी देशांतर से 88°17'40" पूर्वी देशांतर के मध्य है।
- इसका संपूर्ण क्षेत्रफल 94,163 वर्ग किमी. है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रफल 92,257.51 वर्ग किमी. तथा शहरी क्षेत्रफल 1905.49 वर्ग किमी. है। यह भारत के कुल क्षेत्रफल का लगभग 2.86 प्रतिशत है।

भूगर्भिक संरचना

बिहार की भूगर्भिक संरचना के अध्ययन हेतु विभिन्न युग में निर्मित चट्टानों का प्रयोग किया जाता है। बिहार में पाई जाने वाली चट्टानों को 4 प्रमुख संरचनात्मक समूहों में रखा जाता है-

1. धारवाड़ चट्टानें
2. विंध्यन समूह की चट्टानें
3. टर्शियरी चट्टानें
4. क्वाटर्नरी चट्टानें

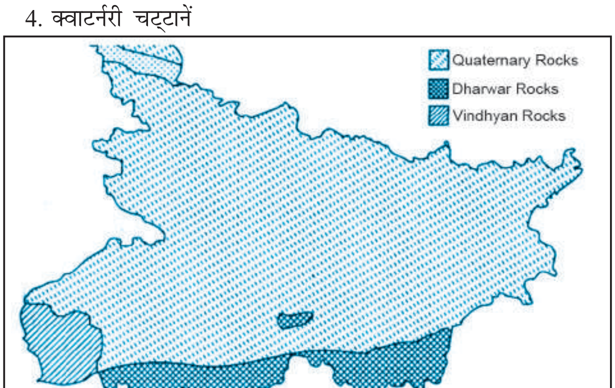

धारवाड़ चट्टानें

प्री-कैंब्रियन युग में निर्मित ये चट्टानें बिहार के दक्षिण-पूर्वी भाग, मुंगेर में स्थित खड़गपुर की पहाड़ी, जमुई, नवादा, राजगीर आदि स्थानों पर पाई जाती हैं। स्लेट, क्वार्टज़ाइट आदि धारवाड़ समूह की चट्टानें हैं।

विंध्यन समूह की चट्टानें

- इस समूह की चट्टानें सोन नदी के उत्तर में स्थित रोहतास तथा कैमूर ज़िले में पाई जाती हैं। इन चट्टानों से सीमेंट उद्योग के लिये चूना-पत्थर तथा गंधक निर्माण के लिये पायराइट मिलता है।
- बालू-पत्थर, क्वार्टज़ाइट, डोलोमाइट, चूना पत्थर आदि इस समूह की चट्टानें हैं। इस समूह की चट्टानों का प्रयोग सासाराम, आगरा, दिल्ली तथा जयपुर में निर्मित ऐतिहासिक स्मारकों तथा सारनाथ, साँची के बौद्ध स्तूपों में किया गया है।

टर्शियरी चट्टानें

टर्शियरी युग की चट्टानें पश्चिमी चंपारण के उत्तर-पश्चिमी भाग-रामनगर दून तथा सोमेश्वर श्रेणी में पाई जाती हैं।

क्वाटर्नरी चट्टानें

- इन चट्टानों का निर्माण प्लीस्टोसीन काल में हुआ है। ये चट्टानें जलोढ़, बालू-बजरी, बालू-पत्थर, कांग्लोमरेट आदि द्वारा निर्मित हैं। इन चट्टानों का निक्षेप शिवालिक के उत्थान के पश्चात् इसके दक्षिण में स्थित सिंधु-गंगा द्रोणी में हुआ है।
- नदियों द्वारा इस निक्षेपण के कारण यहाँ मंद ढाल वाले विशाल मैदान का निर्माण हुआ है, जिसे 'बिहार का मैदान' कहा जाता है। संपूर्ण बिहार के मैदानी भागों में जलोढ़ की गहराई एकसमान नहीं पाई जाती है। गंगा के दक्षिणी भाग में जलोढ़ की गहराई पहाड़ियों के निकट अपेक्षाकृत कम पाई जाती है, जबकि पश्चिम की ओर बढ़ने पर इसकी गहराई बढ़ती है।
- गंगा के दक्षिणी भाग में सबसे गहरे जलोढ़ बेसिन बक्सर तथा मोकामा के बीच पाए जाते हैं। मुज़फ्फरपुर तथा सारण के मध्य जलोढ़ बेसिन की अधिकतम गहराई 1000 से 2500 मीटर के बीच पाई जाती है।
- आरा, डुमराँव, बिहटा तथा पुनपुन को अगर एक काल्पनिक रेखा से मिलाया जाए तो इसके समानांतर स्थित हिंज रेखा के समीप जलोढ़ की गहराई एकाएक 300-350 मीटर से बढ़कर 700 मीटर तक हो जाती है।

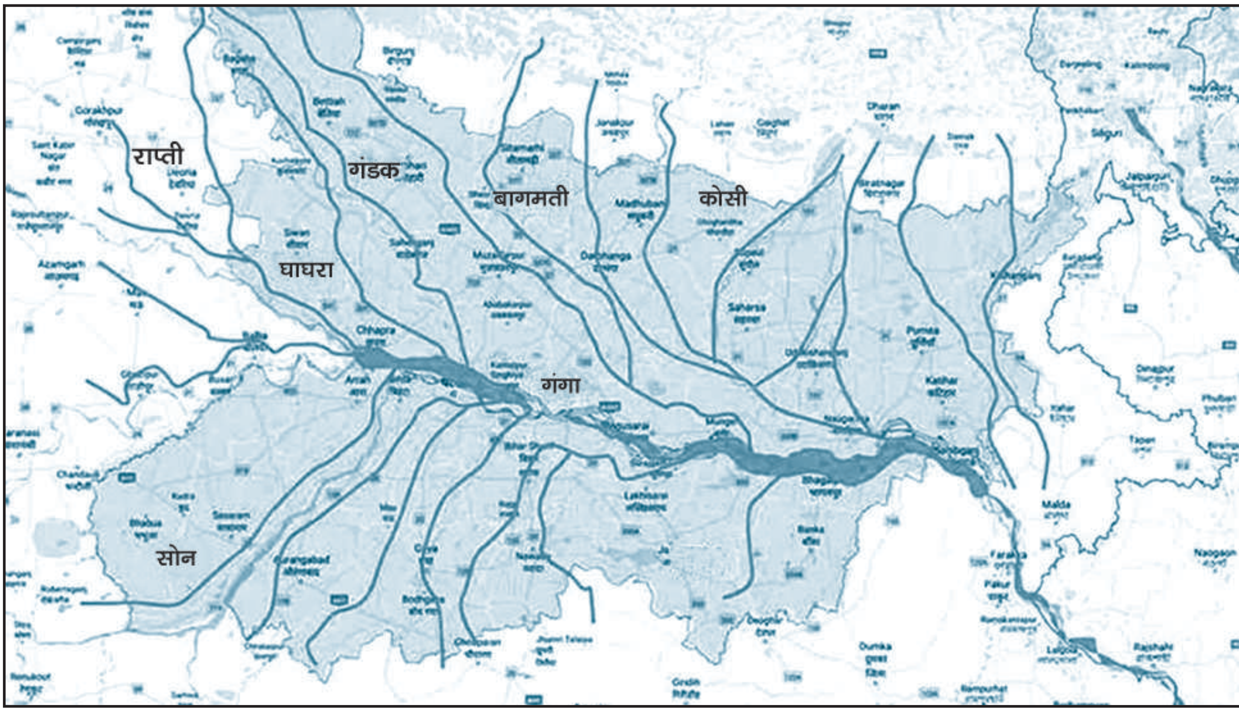

बूढ़ी गंडक

- इस नदी को सामान्यत: गंडक नदी की एक परित्यक्त (Abdicated) धारा माना जाता है। इसकी उत्पत्ति चउतरवा चौर (विश्रामपुर, पश्चिमी चंपारण) से होती है।
- यह नदी पश्चिमी चंपारण, पूर्वी चंपारण, मुज़फ्फरपुर, समस्तीपुर, बेगूसराय तथा खगड़िया ज़िलों से प्रवाहित होती हुई, गंगा में मिल जाती है। मसान, बालोर, पंडई, डंडा, सिकटा, तिऊर, धनौत, कोहरा, तिलावे तथा अंजानकोटे इसकी सहायक नदियाँ हैं। बूढ़ी गंडक की प्रमुख सहायक नदी बागमती है।
- बूढ़ी गंडक नदी गंगा की एक सहायक नदी है। इसे उत्तर बिहार की सबसे लंबी नदी के रूप में जाना जाता है।

बागमती

- इसका उद्गम महाभारत श्रेणी (नेपाल) से होता है। बिहार में इसकी कुल लंबाई 394 किलोमीटर है। यह नदी सीतामढ़ी, शिवहर मुज़फ्फरपुर, दरभंगा, समस्तीपुर तथा बेगूसराय ज़िलों से प्रवाहित होती है।
- लाल वकैया, विष्णुमती, लखनदेई, अधवारा, सिपरीधार, कोला तथा छोटी बागमती इसकी सहायक नदियाँ हैं।

कमला

- इस नदी का उद्गम महाभारत श्रेणी (नेपाल) से होता है। यह नदी जयनगर (मधुबनी) से बिहार में प्रवेश करती है। बिहार में इसकी कुल लंबाई 120 किलोमीटर है।
- मधुबनी, दरभंगा, सहरसा तथा खगड़िया ज़िलों से यह नदी प्रवाहित होती है। सोनी, ढोरी तथा भूतही बलान इसकी प्रमुख सहायक नदियाँ हैं।

फल्गु

यह एक मौसमी नदी है, जिसकी उत्पत्ति छोटानागपुर के पठार से होती है। इसकी कुल लंबाई 235 किलोमीटर है। इस नदी को बोधगया के निकट 'मोहना' नदी के मिलने के बाद ही मुख्यत: फल्गु की संज्ञा दी जाती है। निरंजना (लिलाजन) इस नदी की मुख्य धारा है।

महानंदा

- यह नदी बिहार में मुख्यत: उत्तर-पूर्वी बिहार (किशनगंज, पूर्णिया तथा कटिहार) में प्रवाहित होती है। यह नदी कुछ स्थानों, विशेषकर किशनगंज, पूर्णिया व कटिहार के अंतर्गत बिहार व पश्चिमी बंगाल की सीमा का निर्धारण करती है।
- इसका उद्गम हिमालयी क्षेत्र के अंतर्गत पश्चिम बंगाल के दार्जीलिंग ज़िले में महालदिराम पहाड़ी पर स्थित पागलझोरा जलप्रपात से होता है। यहाँ से यह नदी बिहार, पुन: पश्चिम बंगाल तथा अंतत: बांग्लादेश में जाकर गंगा से मिल जाती है। मेछी तथा कंकई इसकी सहायक नदियाँ हैं।

पुनपुन

यह चौरहा पहाड़ी (पलामू, झारखंड) से निकलने वाली एक मौसमी नदी है, जो बिहार में औरंगाबाद तथा अरवल से प्रवाहित होते हुए फतुहा (पटना) के समीप गंगा नदी में मिल जाती है। इसकी सहायक नदियाँ- दीर्घा, मोरहर तथा रामरेखा हैं।

कर्मनाशा

- यह गंगा की एक सहायक नदी है, जिसकी कुल लंबाई 192 किमी. है। इसका उद्गम कैमूर की पहाड़ी से होता है।

विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्न और अभ्यास प्रश्न

कला-संस्कृति एवं भारतीय इतिहास

1. 19वीं सदी के उत्तरार्ध से भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की आलोचनात्मक समीक्षा कीजिये। *(64वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
2. "चंपारण सत्याग्रह स्वाधीनता संघर्ष का एक निर्णायक मोड़ था।" स्पष्ट कीजिये। *(64वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
3. 19वीं सदी के ब्रिटिशकालीन भारत में समुद्र पारयिता पारंगत के क्या कारण थे? बिहार के विशेष संदर्भ में इन्डेन्चर पद्धति के आलोक में विवेचना कीजिये। *(64वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
4. उपयुक्त उदाहरण सहित 19वीं सदी में जनजातीय प्रतिरोध की विशेषताओं की समीक्षा कीजिये। उनकी असफलता के कारण बताइये। *(64वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
5. मौर्य कला तथा भवन-निर्माण कला की विशेषताओं को स्पष्ट कीजिये तथा बौद्ध धर्म के साथ उनके संबंध पर भी प्रकाश डालिये। *(64वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
6. गांधीजी के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारों की महत्ता का वर्णन कीजिये। *(63वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
7. बिहार में सन् 1857 से सन् 1947 तक पाश्चात्य शिक्षा के विकास की विवेचना कीजिये। *(63वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
8. सन् 1857 के विद्रोह में बिहार के योगदान की विवेचना कीजिये। *(63वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
9. बिहार में संथाल विद्रोह (1855-56) के कारणों एवं परिणामों का मूल्यांकन कीजिये। *(63वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
10. बिहार में चंपारण सत्याग्रह (1917) के कारणों एवं परिणामों का वर्णन कीजिये। *(63वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
11. पटना कलम चित्रकला शैली की मुख्य विशेषताओं का परीक्षण कीजिये। *(63वीं, 48-55वीं, 45वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
12. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान बिहार में जनभागीदारी का वर्णन कीजिये। *(60-62वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
13. बिहार में 1813 से 1947 तक पाश्चात्य शिक्षा के विकास की विवेचना कीजिये। *(60-62वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
14. मौर्य कला पर प्रकाश डालिये तथा बिहार में इसके प्रभाव का विश्लेषण कीजिये। *(60-62वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
15. "गांधी की रहस्यात्मकता में मौलिक विचारों का, दाव-पेंचों की सहज प्रवृत्ति और लोक चेतना में अनोखी पैठ के साथ अनोखा मेल शामिल है।" व्याख्या कीजिये। *(60-62वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
16. बांग्ला साहित्य तथा संगीत में रवीन्द्रनाथ टैगोर के योगदान का मूल्यांकन कीजिये। *(60-62वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
17. जवाहरलाल नेहरू की विदेश-नीति के प्रमुख लक्षणों का परीक्षण कीजिये। *(60-62वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
18. बिहार के विशेष संदर्भ में 1857 की क्रांति के महत्त्व की आलोचनात्मक विवेचना कीजिये। *(56-59वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
19. संथाल विद्रोह के मुख्य कारणों का विवरण दीजिये। उनके क्या प्रभाव हुए? *(56-59वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
20. किसान विद्रोहों के लिये चंपारण सत्याग्रह के महत्त्व को स्पष्ट कीजिये। *(56-59वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
21. राष्ट्रवाद को परिभाषित कीजिये। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने इसे किस प्रकार परिभाषित किया? *(56-59वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
22. आधुनिक भारत के निर्माण में नेहरू की भूमिका की समीक्षा कीजिये। *(56-59वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
23. 1857 की क्रांति में कुँवर सिंह के योगदान का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिये। *(53-55वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
24. "बिरसा आंदोलन का आधारभूत उद्देश्य था आंतरिक शुद्धीकरण तथा विदेशी शासन की समाप्ति की इच्छा।" स्पष्ट कीजिये। *(53-55वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
25. 1940-41 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में बिहार के योगदान का वर्णन कीजिये। *(53-55वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
26. मौर्य कला की प्रमुख विशेषताओं की विवेचना कीजिये। *(53-55वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
27. रवीन्द्रनाथ टैगोर के सामाजिक एवं सांस्कृतिक विचारों की महत्ता का वर्णन कीजिये। *(48-52वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
28. 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार के योगदान का वर्णन कीजिये। *(48-52वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
29. बिहार में संथाल विद्रोह (1855-56) के कारणों एवं परिणामों का विवेचन कीजिये। *(48-52वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
30. बिहार में 1857 के विप्लव के उद्भव के कारणों की विवेचना कीजिये तथा इसकी असफलता का उल्लेख कीजिये। *(47वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
31. क्या आप इस दृष्टिकोण से सहमत हैं कि चंपारण सत्याग्रह भारत के स्वतंत्रता संघर्ष के इतिहास में एक परिवर्तनीय बिंदु था? *(47वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
32. अपने अध्ययन काल में बिहार में तकनीकी शिक्षा के विकास का वर्णन कीजिये। *(47वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
33. मौर्य कला एवं स्थापत्य की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण कीजिये। *(47वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*
34. बंगाल से बिहार के अलग होने एवं आधुनिक बिहार के उदय पर प्रकाश डालिये। *(46वीं BPSC मुख्य परीक्षा)*

दृष्टि The Vision | drishti

Think IAS Think Drishti

अब घर बैठे कीजिये आई.ए.एस. की तैयारी क्योंकि हम आ रहे हैं आपके घर

आई.ए.एस. प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स
(IAS Prelims Online Course)

प्रिय विद्यार्थियो,

संसाधन की कमी अक्सर हमारी उड़ान को सीमित कर देती है। हममें आगे बढ़ने की तड़प तो खूब होती है किंतु उसे साकार करने वाले साधनों का अभाव हमें मायूस कर देता है। पिछले कुछ समय से देश के विभिन्न हिस्सों से आप जैसे हज़ारों विद्यार्थियों ने हमें इस आशय के संदेश भेजे कि वो सिविल सेवा में जाने की इच्छा तो रखते हैं किंतु इसकी तैयारी के लिये दिल्ली में रहने का भारी-भरकम खर्च उठा पाना उनके लिये संभव नहीं है। साथ ही आपने हमसे यह अपेक्षा भी व्यक्त की कि हम ऐसी कोई व्यवस्था करें जिसमें आप घर-बैठे दृष्टि की कक्षा कार्यक्रम जैसी गुणवत्तापरक क्लास कर पाएँ। आपके इन्हीं निवेदनों को ध्यान में रखते हुए हम अपना पहला 'पेन ड्राइव कोर्स' जारी कर रहे हैं जो आई.ए.एस. प्रिलिम्स के पाठ्यक्रम पर केंद्रित है। इसमें आप सामान्य अध्ययन तथा सीसैट के कोर्स ले सकते हैं। लगभग 2 वर्षों की कठोर मेहनत से तैयार हुआ यह वीडियो कोर्स गुणवत्ता में अच्छे से अच्छे क्लासरूम प्रोग्राम को टक्कर दे सकता है। हमें विश्वास है कि यह कोर्स उस अंतराल को भरने में सफल होगा जो दिल्ली में रहकर तैयारी करने वाले और दिल्ली नहीं आ पाने वाले विद्यार्थियों के बीच बना रहता है। निकट भविष्य में हम IAS मुख्य परीक्षा और

एडमिशन प्रारंभ

विद्यार्थियों की भारी मांग को देखते हुए ऑनलाइन पेन ड्राइव कोर्स पर 20% की विशेष छूट अब शुरुआती 1000 विद्यार्थियों के लिये उपलब्ध

मोड : पेन ड्राइव

कक्षाओं की गुणवत्ता को परखने के लिये डेमो वीडियोज़ हमारे यूट्यूब चैनल Drishti IAS की प्लेलिस्ट Online Courses में देखें

ऑनलाइन कोर्स से जुड़ी हर जानकारी के लिये हमारी वेबसाइट www.drishtiias.com पर FAQs पेज देखें

IAS प्रिलिम्स ऑनलाइन कोर्स की विशेषताएँ

1. 500+ घंटे की सामान्य अध्ययन की कक्षाएँ।
2. 120+ घंटे की सीसैट की कक्षाएँ।
3. प्रत्येक कक्षा को 3 बार देखने की सुविधा ताकि आप रिवीज़न भी कर सकें।
4. कक्षाओं में डिजिटल बोर्ड का इस्तेमाल। इमेज, वीडियो आदि की मदद से कठिन विषय समझाने की शैली।
5. हर क्लास के अंत में उस टॉपिक से IAS में पूछे गए और अन्य संभावित प्रश्नों का अभ्यास।
6. स्टेट-ऑफ-द-आर्ट कैमरा और साउंड क्वालिटी जो क्लास के अनुभव को एकदम वास्तविक जैसा बनाती है।
7. प्रिलिम्स के ठीक पहले करेंट अफेयर्स की 30 ऑनलाइन कक्षाएँ (निशुल्क)।
8. ऑनलाइन प्रिलिम्स टेस्ट सीरीज़ (25+5 टेस्ट) की निशुल्क सुविधा।
9. क्विक बुक सीरीज़ की 8 पुस्तकें निशुल्क, जिनके अलावा कोई और स्टडी मैटीरियल पढ़ने की ज़रूरत नहीं।
10. इस कोर्स को करने के बाद अगर आप दृष्टि की किसी भी शाखा में सामान्य अध्ययन (फाउंडेशन कोर्स) करते हैं तो आपकी ऑनलाइन कोर्स की फीस की 50% राशि की छूट दी जाएगी।

जानकारी के लिये कॉल करें- 9319290700, 9319290701, 9319290702, या सिर्फ मिस्ड कॉल करें- 8010600300

दिल्ली शाखा का पता : 641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-09

प्रयागराज शाखा का पता : ताशकंद मार्ग, निकट पत्रिका चौराहा, सिविल लाइन्स, प्रयागराज

Ph.: 8448485517, 8448485519, 87501 87501, 011-47532596

दृष्टि पब्लिकेशन्स की प्रमुख पुस्तकें

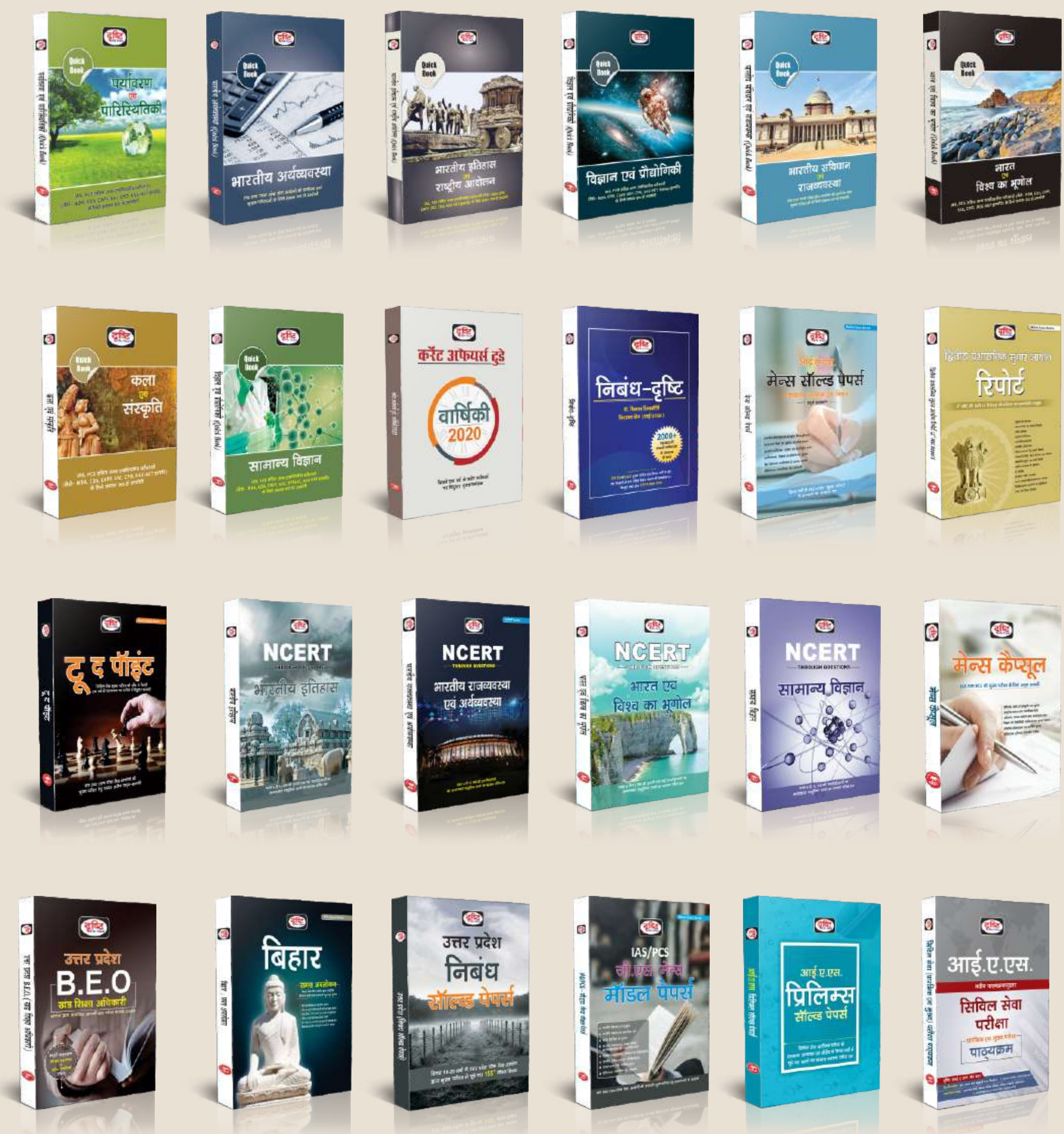

641, Ist Floor, Dr. Mukherji Nagar, Delhi-9
Ph.: 011-47532596, 87501 87501
Website: www.drishtipublications.com, www.drishtiias.com
E-mail: booksteam@groupdrishti.com

ISBN 978-81-945304-0-4
9 788194 530404

मूल्य : ₹ 375